हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 09 | अंक : 40 | प्रयागराज, गुरुवार 11 मई , 2023 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

पुलिस ने तोड़ा नूंह में साइबर ठगों का जाल, 100 करोड़ की ठगी का खुलासा

चंडीगढ़। हरियाणा पुलिस द्वारा जिला नूंह में साइबर जालसाजों के ठिकानों पर एक साथ की गई रेड के बाद जांच में अब तक देश भर में लगभग 100 करोड़ रुपये की साइबर ठगी का खुलासा हुआ है। ये महाठग फर्जी सिम, आधार कार्ड इत्यादि द्वारा देशभर के लोगों से ठगी करते और फर्जी बनाए बैंक खातों में राशि डलवा देते ताकि पुलिस इन तक ना पहुंच सके। इल जालसाजों द्वारा हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी, दिल्ली और यूपी से लेकर अंडमान निकोबार तक लोगों को निशाना बनाया जा चुका है। इनके पकड़े जाने से देशभर में साइबर ठगी के लगभग 28,000 केस ट्रेस हुए हैं। नूंह पुलिस अधीक्षक वरूण सिंगला ने आज नूंह में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए बताया कि 27,28 अप्रैल की मध्यरात्रि को 5000 पुलिसकर्मियों की 102 टीमों ने जिले के 14 गांवों में एक साथ छापेमारी की थी। इस दौरान करीब 125 संदिग्ध हैकर्स को हिरासत में लिया गया था। इनमें से 66 आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार किया गया। सभी को अदालत में पेशकर 7 से 11 दिन की रिमांड पर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद पूरे मामले का पर्दाफाश करने के लिए हरियाणा के पुलिस महानिदेशक श्री प्रशांत कुमार अग्रवाल ने इन साइबर अपराधियों से पूछताछ के लिए पूरे हरियाणा से 40 साइबर विशेषज्ञों की एक टीम तैयार की। इस प्रकार साइबर विशेषज्ञों की मदद से पकड़े गए साइबर अपराधियों से निरंतर पूछताछ की गई और साइबर धोखाधड़ी द्वारा अपनाई जा रही कार्यप्रणाली के साथ–साथ फर्जी सिम और बैंक खातों के स्रोतों के बारे में विस्तश्त जानकारी प्राप्त की गई। छापे के दौरान जब्त किए गए मोबाइल फोन और सिम कार्ड की भी तकनीकी रूप से जांच की गई और टीएसपीध आईएसपी, बैंक, एनपीसीआई, यूपीआई इंटरमीडियरीज, यूआईडीएआई, डीओटी, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक, व्हाट्सएप, ओएलएक्स आदि से संबंधित जानकारी भी मांगी गई। साथ ही, केंद्रीय गश्ह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की सहायता से भी इन साइबर ठगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले फर्जी बैंक खातों, सिम, मोबाइल फोन आदि को देश भर में प्राप्त साइबर अपराध की शिकायतों से जोड़ने का अनुरोध किया गया था। इस विश्लेषण के दौरान यह बात सामने आई है कि साइबर ठगों ने अब तक देश भर के 35 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से करीब 28000 भोले–भाले लोगों से 100 करोड़ रुपये से अधिक की ठगी को अंजाम दिया है। पकडे गए इन साइबर जालसाजों के खिलाफ देशभर में पहले से ही 1346 प्राथमिकी दर्ज होनी पाई गई हैं। ऐसे ठगों की संलिप्तता तय करने के लिए इन साइबर अपराधियों का विवरण राज्यों के संबंधित वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को भेजा जा रहा है। जांच में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के 219 खातों और 140 यूपीआई खातों के बारे में भी जानकारी सामने आई, जिनका इस्तेमाल साइबर धोखाधड़ी करने के लिए किया जा रहा था। ये बैंक खाते मुख्य रूप से ऑनलाइन सक्रिय पाये गये और नौकरी देने के बहाने लोगों को धोखा देकर और फिर आधार कार्ड, पैन कार्ड, मोबाइल नंबर और ऑनलाइन केवाईसी करवाकर ठगी की जा रही थी। इसके अलावा, टेलीकॉम कंपनियों के हरियाणा, पश्चिम बंगाल, असम, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, मध्य प्रदेश, दिल्ली, तमिलनाडु, पंजाब, नोर्थ ईस्ट, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक सर्किल से एक्टिवेट 347 सिम कार्ड का भी पता चला है जिनका उपयोग ये ठग साइबर क्राइम के लिए कर रहे थे। जांच के दौरान फर्जी सिम और बैंक खातों का स्रोत मुख्य रूप से राजस्थान के भरतपुर जिले से जुड़ा पाया गया है। उन्होंने बताया कि नूंह जिले में दर्ज 16 मामलों में पकड़े गए साइबर अपराधियों के सह अभियुक्त के रूप में काम करने वाले 250 वांछित साइबर अपराधियों की भी पहचान की गई है, जिनमें से 20 राजस्थान के, 19 उत्तर प्रदेश और 211 हरियाणा के हैं। साइबर अपराधियों, जो 18–35 वर्ष की आयु वर्ग में हैं, ने खुलासा किया है कि वे आम तौर पर 3–4 व्यक्तियों के समूह में काम करते थे। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि नकली बैंक खाते, नकली सिम कार्ड, मोबाइल फोन, नकद निकासीध वितरण और सोशल मीडिया वेबसाइटों पर विज्ञापन पोस्ट करने जैसी तकनीकी सेवाओं को एक गांव में केवल कुछ मुट्ठी भर व्यक्तियों द्वारा धोखाधड़ी राशि का 5 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक कमीशन शुल्क लेने के बाद प्रदान की गई थी। साइबर अपराधी नकद निकासी के लिए मुख्य रूप से कॉमन सर्विस सेंटर का इस्तेमाल करते थे, जबकि कुछ अन्य इसके लिए विभिन्न गांवों में स्थापित एटीएम का इस्तेमाल करते थे। साइबर जालसाजों के ठगी करने के तरीके का विवरण देते हुए श्री वरुण सिंगला ने बताया कि ये महाठग फेसबुक बाजार,ओएलएक्स आदि पर बाइक, कार, मोबाइल फोन इत्यादि जैसे उत्पादों पर आकर्षक ऑफर का लालच देकर धोखाधड़ी की घटना को अंजाम देते थे। पीड़ित दिए गए मोबाइल नंबर पर जालसाज को कॉल करता और जालसाज कूरियर शुल्क, उत्पाद के परिवहन आदि के बहाने पीड़ित को धोखा देता लेकिन उत्पाद कभी डिलीवर नहीं होता था।

कर्नाटक चुनाव: बोम्मई ने मतदान किया, बहुमत का भरोसा जताया

हुबली । कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने 224 सदस्यीय राज्य विधानसभा के लिए चल रहे चुनाव में अपना वोट डाला। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि भाजपा बहुमत की सरकार बनाएगी। अपने परिवार के सदस्यों के साथ उन्होंने हावेरी जिले के शिगगांव निर्वाचन क्षेत्र में सरकारी स्कूल में स्थित मतदान केंद्र पर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मतदान के बाद पत्रकारों से बात करते हुए बोम्मई ने कहा, एक तरफ विकास है तो दूसरी तरफ विकास नहीं होने के आरोप हैं। गठबंधन सरकार राज्य का विकास सुनिश्चित नहीं कर सकती है। भाजपा सरकार पर दबाव डाला गया था और पिछली कांग्रेस–जद (एस) गठबंधन सरकार के कारण अतिरिक्त जिम्मेदारी थी। उन्होंने कहा, हमने राज्य में कोविड–19 महामारी का कुशलता से प्रबंधन किया है। हमने आर्थिक प्रगति सुनिश्चित की है और कई नए कार्यक्रम दिए हैं। उन्होंने कहा, राज्य के विकास और कल्याण के लिए लोगों के वोट की जरूरत है। एक विधायक और मुख्यमंत्री के रूप में मतदान करने में ज्यादा अंतर नहीं है। मैंने एक आम आदमी के रूप में मतदान किया है। उन्होंने मतदाताओं से लोकतंत्र की जीत सुनिश्चित करने के लिए मतदान करने की अपील की। उन्होंने आगे आग्रह किया, हम सभी ने लोकतंत्र के उत्सव में भाग लिया और वोट डाला। आपको भी अपने घरों से बाहर निकलना चाहिए और मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए। इससे पहले सुबह बोम्मई अपने परिवार के साथ हुबली में अंजनेय मंदिर तथा पार्श्व पद्मालय धाम जैन मंदिर और शिगगांव शहर में गायत्री देवी मंदिर गए। मतदान सुबह सात बजे शुरू हुआ और शाम छह बजे तक चलेगा। इस बीच, राज्य के शीर्ष राजनीतिक नेताओं ने भी अपने परिवार के सदस्यों के साथ मतदान किया है। पूर्व मुख्यमंत्री और हुबली सेंट्रल सीट से कांग्रेस उम्मीदवार जगदीश शेट्टर ने अपनी पत्नी शिल्पा और बेटों प्रशांत तथा संकल्प और दोनों बहुओं के साथ वोट डाला। हुबली सेंट्रल से भाजपा उम्मीदवार महेश तेंगिंकाई ने भी हुबली में अपना वोट डाला। केंद्रीय कोयला और खान मंत्री प्रह्लाद जोशी ने भी अपने परिवार के साथ हुबली में वोट डाला। राज्य के उच्च शिक्षा, आईटी और बीटी मंत्री डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ मल्लेश्वरम में मतदान किया। स्वास्थ्य मंत्री के. सुधाकर ने चिक्काबल्लापुर में अपने मताधिकार का प्रयोग किया। वह अपने पिता और पत्नी के साथ मतदान केंद्र पहुंचे।

निर्मला सीतारमन ने किया मतदान,कहा, विपक्ष को महंगाई पर बात करने का हक नहीं

बैंगलुरु। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने महंगाई के मुद्दे पर विपक्ष के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर किये जा रहे हमले को लेकर बुधवार को कहा कि उन्हें सत्ताधारी भगवा पार्टी पर हमला करने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के कार्यकाल में महंगाई दर छह प्रतिशत से ऊपर थी। सीतारमन ने यहां जयनगर मतदान केंद्र पर अपना वोट डालने के बाद संवाददाताओं से कहा," जब संप्रग सरकार 10 साल सत्ता में थी, तब महंगाई दर छह फीसदी से ऊपर थी। अब छह फीसदी का क्या मतलब है? कोई कह सकता है कि छह फीसदी महंगाई दर सहनीय है, लेकिन संप्रग शासन के दौरान यह छह प्रतिशत से अधिक थी। "उन्होंने कहा," हां, मैं लोगों के साथ हूं, महंगाई दर और नीचे आनी चाहिए, लेकिन विपक्ष के पास कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि उन्हें उन दरों को देखना चाहिए, जो उनके शासन के दौरान थीं। सीतारमन ने कहा कि केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने महंगाई को नियंत्रित करने के लिए लगातार कई कदम उठाए हैं और यह प्रशंसनीय है कि वर्तमान बसवराज बोम्मई सरकार ने राज्य में ईंधन पर उत्पाद शुल्क में कटौती की। वित्त मंत्री ने इस मुद्दे पर अपना पक्ष रखा, क्योंकि कांग्रेस और जेडीएस ने राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले चुनाव प्रचार के दौरान इसे मुख्य मुद्दों में से एक बनाया था। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका वाड्रा के हनुमान मंदिर जाने पर श्रीमती सीतारमण ने कहा कि वे "चुनावी भक्त" (चुनाव के दौरान भक्त) हैं, और कहा कि कांग्रेस के घोषणापत्र में बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने का संकल्प लेना उसके द्वारा उठाए गए सबसे बेवकूफी भरे कदमों में से एक है। उन्होंने कहा," हम हमेशा बजरंग बली जी को प्रणाम करते हैं और हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। लेकिन कांग्रेस के लोग चुनाव के दौरान हनुमान जी के भक्त बन जाते हैं। कर्नाटक हनुमान जी की जन्मभूमि है। मैं सुनी–सुनाई बात नहीं कर रही हूं, यह उनके घोषणापत्र (बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने के लिए) में लिखा है।" इससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण कदम (कांग्रेस द्वारा उठाया गया) नहीं हो सकता है।

सिद्दारमैया ने खेला कन्नड़ कार्ड, कांग्रेस को 130 से ज्यादा सीटें मिलने का किया दावा

बेंगलुरु । वरुणा, कांग्रेस नेता सिद्धारमैया ने बुधवार को कर्नाटक विधानसभा चुनाव में मतदान करने से पहले दावा किया कि उनकी पार्टी 150 सीटों पर विजय हासिल करेगी। श्री सिद्दारमैया ने आज मतदान के दिन कन्नड़ कार्ड खेलते हुए संवाददाताओं से यह दावा किया। सिद्दारमैया ने वरुणा में मतदान करने के बाद संवाददाताओं से कहा, "कर्नाटक के लोगों को देखने के बाद मैं लगातार यह कह रहा हूं कि कांग्रेस पार्टी को 130 से अधिक सीटें मिलेंगी और यह संख्या 150 तक भी जा सकती है। वरुणा विधानसभा सीट से कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री सिद्दारमैया के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कद्दावर नेता वी सोमन्ना उतरे हैं। कर्नाटक कांग्रेस पार्टी के हिंदी विरोधी कार्ड को खेलते हुए श्री सिद्दारमैया ने हिंदी में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार कर दिया और पत्रकारों से या तो अंग्रेजी या कन्नड़ में पूछने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, "यह कर्नाटक है, यहां की आधिकारिक भाषा कन्नड़ है।

जब एक ही मंच पर पहुंचे पीएम मोदी और सीएम गहलोत, एक दूसरे पर ऐसे साधा निशाना

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को राजस्थान के राजसमंद जिले के नाथद्वारा में विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करने पहुंचे। इस दौरान एक ही मंच पर जब पीएम मोदी और राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पहुंच तो अपने–अपने भाषणों में बिना किसी का नाम लिए एक दूसरे पर जमकर निशाना साधा।

एक ओर जहां गहलोत ने इशारों ही इशारों में कहा कि पहले हम गुजरात से मुकाबला करते थे और महसूस करते थे कि हम पिछड रहे हैं लेकिन अब हम आगे बढ गए हैं। तो वहीं पीएम ने कहा कि देश में कुछ लोग इतनी नकारात्मकता से भरे हैं कि वह कुछ भी अच्छा होता देखना नहीं चाहते। सबसे पहले मंच पर अशोक गहलोत आए और संबोधित किया। इस दौरान राजस्थान सीएम ने कहा, ष्मैं पीएम मोदी का स्वागत करता हूं। मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री आज राष्ट्रीय राजमार्ग और रेलवे परियोजनाओं को समर्पित करेंगे। राजस्थान में अच्छे काम हुए हैं, राजस्थान में सडकें अच्छी हैं। पहले हम गुजरात से मुकाबला करते थे और महसूस करते थे कि हम पिछड रहे हैं लेकिन अब हम आगे बढ गए हैं। गहलोत ने आगे कहा,ष्मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि हमारी सरकार के सुशासन के कारण राजस्थान आर्थिक विकास के मामले में देश में दूसरे नंबर पर पहुंच गया है। हमारे राज्य की लंबित मांगों को लेकर मैं आपको (पीएम मोदी) पत्र लिखता रहता हूं और लिखता रहूंगा। इस दौरान अशोक गहलोत ने कहा कि विपक्ष का भी सम्मान होना चाहिए। लोकतंत्र में दुश्मनी नहीं विचारधारा की लडाई है। देश में प्रेम और भाईचारा बना रहे। हम मिलकर चलेंगे तो देश एक और अखंड रहेगा। हिंसा विकास को रोकती है।

विपक्ष के बिना सरकार नहीं होती इसलिए विपक्ष का सम्मान होना चाहिए। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने माइक संभाला और संबोधित किया। पीएम मोदी ने भी किसी का नाम लिए बिना कहा कि देश में कुछ लोग नकारात्मकता से भरे हैं। कुछ लोगों को विवाद खडघ करना ही अच्छा लगता है। नकारात्मकता से भरे लोगों की दूरदृष्टि नहीं होती। ऐसे लोग राजनीति से ऊपर उठकर कुछ नहीं सोच पाते हैं।

पीएम ने कहा कि जो लोग हर चीज वोट के तराजू से तौलते हैं वो जनता को ध्यान में रखकर योजना नहीं बना पाते। पीएम ने कहा कि आपने कुछ लोगों को श्आटा पहले या डाटा पहले कहते सुना होगा लेकिन इतिहास गवाह है कि तेज गति से हो रहे विकास के लिए बुनियादी सुविधाओं के साथ–साथ आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर भी जरूरी है।

केरल: मरीज ने सर्जरी वाले ब्लेड से हमला कर डॉक्टर को उतारा मौत के घाट हमले से आक्रोश में आए विपक्ष सरकार पर बरसा

कोल्लम। केरल के कोल्लम जिले में कोट्टारक्कारा के एक तालुक अस्पताल में इलाज के लिए लाए गए एक निलंबित स्कूल शिक्षक ने बुधवार को उसके ही घाव की ड्रेसिंग कर रही 23 वर्षीय एक महिला डॉक्टर को कथित तौर पर सर्जरी में इस्तेमाल होने वाले ब्लेड से हमला कर मार डाला। आरोपी व्यक्ति को परिवार के सदस्यों के साथ मारपीट करने के बाद पुलिस अस्पताल ले कर आई थी। कोट्टारक्कारा पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान संदीप के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि अस्पताल में जब डॉक्टर वंदना दास, आरोपी के पैर के घाव की ड्रेसिंग कर रही थी तभी वह अचानक हिंसक हो गया और कैंची तथा सर्जरी में इस्तेमाल होने वाले ब्लेड से वहां खडे सभी लोगों पर हमला कर दिया। अधिकारी ने बताया कि यह घटना बुधवार की सुबह हुई। हमले में बुरी तरह घायल डॉक्टर को तिरुवनंतपुरम में एक निजी अस्पताल ले जाया गया जहां उसने कुछ ही घंटों के बाद दम तोड दिया। अधिकारी के मुताबिक, आरोपी को अस्पताल लेकर आए पुलिस कर्मी भी हमले में घायल हो गए। केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने डॉक्टर की मौत पर शोक व्यक्त किया और कहा कि यह घटना चौंकाने वाली और बेहद दर्दनाक है। उन्होंने कहा कि मामले की विस्तृत जांच की जाएगी। विजयन ने एक बयान में कहा कि ड्यूटी के दौरान स्वास्थ्य कर्मियों पर हमला अस्वीकार्य है। घटना की गहन जांच की जाएगी। सरकार चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों पर हमलों के खिलाफ कडी कार्रवाई करेगी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) और केरल गवर्नमेंट मेडिकल ऑफिसर्स एसोसिएशन (केजीएमओए) ने इस घटना के खिलाफ पूरे राज्य में विरोध प्रदर्शन किया। वहीं, घटना को लेकर मीडिया में आईं खबरों के आधार पर केरल राज्य मानवाधिकार आयोग ने स्वतरू संज्ञान लिया और कोल्लम के जिला पुलिस प्रमुख से सात दिनों के भीतर एक रिपोर्ट मांगी है। इस घटना के बाद राज्य की स्वास्थ्य मंत्री वीना जार्ज द्वारा मीडिया को दिए गए उस बयान के बाद राजनीतिक विवाद शुरू हो गया जिसमें उन्होंने कहा कि डॉक्टर एक हाउस सर्जन थी इसलिए अनुभवहीन थी और हमले के वक्त वह डर गई। मंत्री के बयान की आलोचना करते हुए केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के सुधाकरन ने सवाल किया कि डॉक्टर के अनुभवहीन होने से मंत्री का क्या मतलब है।

उन्होंने कहा, क्या उनका मतलब यह है कि डॉक्टर नशीली दवाओं और शराब के आदी व्यक्ति के हमले का मुकाबला करने या बचाव करने के लिए अनुभवहीन थी? उनके द्वारा दिया गया बयान हास्यास्पद है। डॉक्टर के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सुधाकरन ने कहा कि यह दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसा कुछ हुआ। केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वी डी सतीशन ने कहा कि डॉक्टर की हत्या ने पूरे केरल को झकझोर कर रख दिया है। उन्होंने कहा कि यह बहुत खतरनाक स्थिति है कि अब अस्पताल भी सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस की लापरवाही के कारण महिला डॉक्टर की जान गई।

मजाक की बात पर कभी मजाक में ही जवाब मिल जाएगा, सचिन पायलट की टिप्पणी पर पवन खेडा का पलटवार

नई दिल्ली। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेडा ने बुधवार को कहा कि उन्हें राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट की वह टिप्पणी मजाकिया लगती है जिसमें उन्होंने कहा था कि "मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का हालिया भाषण यह दर्शाता है कि उनकी नेता सोनिया गांधी नहीं, बल्कि वसुंधरा राजे हैं। खेडा ने पार्टी मुख्यालय में संवाददाताओं से बातचीत के दौरान, पायलट के बयान के संदर्भ में पूछे जाने पर यह भी कहा कि कांग्रेस के राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर रंधावा जब चर्चा के बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे तो मीडिया के साथ उसे साझा करेंगे। उन्होंने कहा, "(राजस्थान में) कुछ समाधान करने लायक तो है नहीं मजाक में कुछ कह दें तो मजाक का थोडे ही समाधान निकाला जाता है। मजाक की बात पर कभी मजाक में ही जवाब मिल जाएगा। इस बारे में विस्तश्त प्रतिक्रिया मांगे जाने पर खेडा ने फिर कहा, "मुझे बात (पायलट की टिप्पणी) सुनकर हंसी आईकृ तो मुझे लगा कि हो सकता है कि उन्होंने मजाक किया होगा। पायलट की प्रस्तावित यात्रा पर उनका कहना था, "यह सब प्रभारी के संज्ञान में होता है। प्रभारी सबसे चर्चा करते हैं। किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद जो सार्वजनिक करना है उसे सार्वजनिक कर दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर पलटवार करते हुए मंगलवार को कहा था कि गहलोत का हालिया भाषण दर्शाता है कि उनकी नेता सोनिया गांधी नहीं, बल्कि वसुंधरा राजे हैं। पायलट ने गहलोत के उन आरोपों का पुरजोर खंडन किया था कि 2020 में उनके (गहलोत के) खिलाफ बगावत करने वाले विधायकों ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से पैसे लिये थे और उन्हें (विधायकों को) भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता अमित शाह को पैसे वापस कर देने चाहिए। इसके साथ ही पायलट ने विधानसभा चुनाव से पहले गहलोत व पार्टी आलाकमान पर दबाव बढाते हुए भ्रष्टाचार के मुद्दे पर 11 मई से अजमेर से जयपुर तक जनसंघर्ष पदयात्रा निकालने की भी घोषणा की थी। कांग्रेस नेता ने कहा कि मुख्यमंत्री जिस तरह से आरोप लगा रहे हैं, वह गंभीर राजनीति कदापि नहीं है।

सम्पादकीय

चीन की बेचौनी

यह चीन की परेशानी का ही नतीजा है कि भारतीय नौसेना के आसियान देशों के साथ दक्षिण चीन सागर में हुए युद्धाभ्यास की वह बड़े पैमाने पर निगरानी करता रहा। उल्लेखनीय है कि हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन के निरंकुश व्यवहार पर अंकुश लगाने के लिये गत सात व आठ मई को दक्षिण चीन सागर में भारत ने आसियान देशों की नौसेनाओं के साथ युद्ध अभ्यास किया। जिसमें भारतीय नौसेना के अलावा आसियान देश फिलीपींस, इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, ब्रूनेई और वियतनाम की नौसेनाएं शामिल हुई थीं। बताया जाता है कि चीन न केवल फाइटर जेट व खुफिया वॉरशिप से जासूसी कर रहा था बल्कि चीनी समुद्री मिलिशिया जहाज भी युद्धाभ्यास की जगह से करीब पचास किलोमीटर की दूरी पर देखे गये। दुनिया को भरमाने के लिये यूं तो चीन ने मिलिशिया जहाजों को व्यापारिक जहाजों के रूप में पंजीकृत कर रखा है,लेकिन असल में ये पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की नेवी विंग के इशारे पर समुद्र में अपनी गतिविधियों को अंजाम देते हैं। उल्लेखनीय है कि जिस तरह चीन दक्षिण एशिया में छोटे देशों के साथ मिलकर भारत की घेराबंदी करता रहा है, उसी की तर्ज पर भारत भी आसियान देशों के साथ मिलकर रणनीतिक साझेदारी को मूर्त रूप दे रहा है। जिससे परेशान होकर चीन युद्धाभ्यास की निगरानी कर रहा था। हालांकि, चीनी युद्धपोत अभ्यास स्थल के ज्यादा करीब नहीं आये, जिसके चलते किसी टकराव की आशंका टल गई। खबरों के मुताबिक, चीनी युद्धक जहाज व एयरक्राफ्ट दक्षिण चीन सागर में मौजूद थे। दरअसल, हाल के दिनों में हिंद प्रशांत व चीन सागर में चीन की आक्रामक गतिविधियां तेज हुई हैं। इतना ही नहीं, तमाम आसियान देशों से समुद्री सीमा को लेकर उसका विवाद चल रहा है। यहां तक कि फिलीपींस चीन के खिलाफ समुद्री सीमा विवाद के मामले में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय गया और अपनी संप्रभुता को लेकर मुकदमा जीता भी। इसके अलावा वियतनाम आदि कई पड़ोसी देशों से चीन का सीमा विवाद बना हुआ है। उल्लेखनीय है कि वियतनाम के विशिष्ट आर्थिक जोन में इस ड्रिल को अंजाम दिया गया। हालांकि, चीन के किसी हस्तक्षेप को टालने के लिये चीनी जहाजों पर सतर्कतापूर्वक नजर रखी जा रही थी। इससे पूर्व भारत के गाइडेड मिसाइल विध्वंसक से लैस आईएनएस दिल्ली और स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस सतपुड़ा ने भी अभ्यास में भागीदारी सिंगापुर के नौसेनिक अड्डे पर की थी। बहरहाल, भारत ने कूटनीतिक बढ़त लेने के इरादे से उन देशों से करीबी संबंध बनाये हैं, जिनके चीन के साथ रिश्ते खराब चल रहे हैं। इतना ही नहीं, कई देशों के साथ युद्ध से जुड़े अभ्यास कार्यक्रम भी चलाये गये हैं। जिसका मकसद युद्धक विमानों तथा पनडुब्बियों का कुशल संचालन करना है। यहां तक कि भारत कई आसियान देशों को हथियार भी बेचने लगा है। पिछले दिनों फिलीपींस के साथ भारत ने ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइलों से जुड़े सिस्टम का सौदा किया था। फिलीपींस के साथ यह सौदा 375 मिलियन डॉलर का बताया जाता है। ऐसा ही सौदा वियतनाम व इंडोनेशिया के साथ भी होने की उम्मीद है। भारत ने चीन के साथ सीमा विवाद के चलते सुरक्षात्मक रणनीति के तहत आसियान देशों के साथ करीबी रिश्ते स्थापित किये हैं। दरअसल, आसियान देशों के साथ इस समुद्री युद्धाभ्यास का मकसद उन टकरावों को टालना था, जिनके अचानक समुद्र में घटने की आशंका रहती है। इसके जरिये आपसी भरोसे को बढ़ाने तथा दुर्घटनाओं की आशंकाओं को कम करना भी था। ऐसा चीन द्वारा लगातार विवादों को हवा देने के चलते अपरिहार्य हो गया था। भारत की सीमाओं का अतिक्रमण करने की कोशिशों में लगे चीन को अहसास कराना भी जरूरी था कि हम भी उसके खिलाफ दूसरे मोर्चे तैयार कर सकते हैं। आसियान इंडिया मेरीटाइम एक्सरसाइज इसी कड़ी का हिस्सा थी जो बिना किसी बाधा के पूर्ण भी हो गयी। यद्यपि चीन पूरे दक्षिणी चीन सागर पर अपना दावा जताता रहा है लेकिन वहीं दूसरी ओर आसियान देश भी इसके अलग–अलग हिस्सों पर अपनी दावेदारी जताते रहे हैं। जिसके बूते ही भारत इन देशों के साथ सामरिक हितों को बढ़ावा दे रहा है। भारत की अंतिम कोशिश है कि चीन के खिलाफ आसियान देशों को मजबूत किया जाये।

जम्मू कश्मीर में आराम से चुनाव होंगे?

ऐसा लग रहा था कि इस साल मई या जून में जम्मू कश्मीर का चुनाव हो जाएगा। परिसीमन आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सीटों का परिसीमन हो गया है। सीटों को आरक्षित करने का काम भी हो गया है और उसकी अधिसूचना जारी हो गई है। उसके बाद चुनाव आयोग नए नई सीटों की भौगोलिक संरचना के हिसाब से मतदाता सूची तैयार करा ली है। मतदाता सूची के दोबारा पुनरीक्षण का काम भी पूरा हो गया है या पूरा होने वाला है। इसके बावजूद चुनाव की कोई आहट नहीं सुनाई दे रही है। सवाल है कि जम्मू कश्मीर में चुनाव की घोषणा क्यों नहीं हो रही है?पिछले दिनों भाजपा के महासचिव तरुण चुघ ने कम से कम दो बार भाजपा कार्यकर्ताओं से कहा कि वे चुनाव के लिए तैयार रहें, किसी भी समय चुनाव की घोषणा हो सकती है। इसी वजह से माना जा रहा था कि कर्नाटक के साथ जम्मू कश्मीर का चुनाव होगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और अब किसी को अंदाजा नहीं है कि राज्य में विधानसभा चुनाव कब होगा। ध्यान रहे जम्मू कश्मीर में विधानसभा नवंबर 2018 में भंग हुई थी। उसके करीब एक साल बाद अनुच्छेद 370 समाप्त करके राज्य का विशेष दर्जा खत्म कर दिया गया। उसका बंटवारा हुआ और वह केंद्र शासित प्रदेश बन गया। इस तरह साढ़े चार से राज्य में विधानसभा नहीं है। परंतु सरकार को चुनाव कराने और लोकतांत्रिक व्यवस्था बहाल करने की जल्दी नहीं है। कहा जा रहा है कि भाजपा को यह भरोसा नहीं बन पा रहा है कि वह चुनाव जीत कर अपनी सरकार बना लेगी और हिंदू मुख्यमंत्री नियुक्त कर सकेगी।

जनता की सुरक्षित यात्रा से बेपरवाह सत्ताधीश

मध्यप्रदेश में मंगलवार की सुबह साढ़े पांच बजे के लगभग खरगोन में एक भयंकर सड़क हादसा हुआ। खरगोन जिले के डोंगरगांव में यात्रियों से भरी बस एक पुल की रेलिंग तोड़ते हुए नीचे सूखी हुई नदी में जा गिरी। इस हादसे में 15 से अधिक लोगों की मौत की खबर है, जबकि कई लोग घायल हैं। राज्य के गृहमंत्री के मुताबिक इस घटना में मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए गए हैं। इस जांच के बाद ही दुर्घटना की सही वजह पता लगेगी। शिवराज सिंह चौहान की सरकार ने हादसे में मश्तकों के परिजनों को 4 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को 50 हजार रुपये और मामूली घायलों को 25 हजार रुपये बतौर मुआवजा देने का ऐलान किया है। अब गंभीर और मामूली घायलों को किस तरह अलग–अलग परिभाषित किया जाएगा, यह अलग सवाल है। वैसे इस बात पर किसी को शोध करना चाहिए कि एक साल में हमारी निर्वाचित सरकारें कितने लाख या करोड़ रूपए उन दुर्घटनाओं के लिए मुआवजे के तौर पर देती हैं, जिन्हें रोका जा सकता था। प्राकृतिक हादसों पर तो किसी का जोर नहीं, लेकिन भगदड़, दीवार या छत गिरना, सड़क दुर्घटना, जहरीली शराब ये सब सरकार–प्रशासन निर्मित दुर्घटनाएं हैं, जिनके लिए सरकारों को दंडित किया जाना चाहिए, मगर सरकारें जनता की गाढ़ी कमाई को मुआवजे के तौर पर देकर एहसान जताती हैं। चुनावों के वक्त घोषणापत्रों में तमाम तरह के वादे किए जाते हैं, भाषणों में हिंदू–मुसलमान के नाम पर बेशर्मी से वोट मांगे जाते हैं, लेकिन कभी कोई ये वादा नहीं करता कि इस तरह के हादसों को रोकने की ईमानदार कोशिश की जाएगी। इसमें पूरा दोष सरकारों पर नहीं डाला जा सकता। जनता भी इस तरह के हादसों को अपनी नियति मान चुकी है। इसलिए वह सरकार से जवाब नहीं मांगती, केवल सड़कों–पुलों के शिलान्यास पर ताली बजाने के लिए भीड़ के रूप में जुट जाती है। ऐसा एक दिन भी नहीं गुजरता जब देश में कहीं कोई सड़क दुर्घटना न हुई हो। किसी न किसी हिस्से में दुर्घटनाएं होती ही रहती हैं। अगर एक–दो लोगों की जान जाए, तो उसे अब लोग सामान्य खबर की तरह लेने लगे हैं और अगर अधिक लोग हताहत हों, तो थोड़ा बहुत अफसोस पीड़ितों के लिए किया जाता है, लेकिन सरकार से जवाबदेही मांगने जैसी कोई पहल कहीं दिखाई नहीं देती। वैसे भी सड़क हादसों में मरने वाले अधिकतर गरीब, निम्न मध्यमवर्गीय लोग होते हैं, जिनका जिंदा रहना राजनैतिक दलों के लिए इसलिए जरूरी है कि उनसे उन्हें वोट मिल जाते हैं, इससे अधिक उनकी जिंदगी की उपयोगिता नहीं मानी जाती है। अभी 4 मई को अजमेर जा रहे श्रद्धालुओं की एक कार पर टैंकर पलट गया तो 8 लोगों की मौत हो गई। इसी दिन छत्तीसगढ़ में धमतरी के पास नेशनल हाइवे पर सड़क हादसे में 10 लोग मारे गए। 6 मई को लखनऊ– बहराइच मार्ग के पास कैसरगंज कस्बे में एक ऑटो को दूसरे वाहन की टक्कर से ऑटो सवार 6 लोगों की मौत हो गई। 7 मई को मुरादाबाद में दलपतपुर–काशीपुर हाइवे पर दो वाहनों की भिड़ंत में 10 लोग मारे गए। यानी पिछले पांच–छह दिनों में अलग–अलग राज्यों में कम से कम 50 लोग सड़क हादसों का शिकार हो गए। इनमें एक–दो मश्तकों वाले हादसों को शामिल ही नहीं किया गया है, वर्ना आंकड़ा और बढ़ जाएगा। भारत विश्व की सड़क हादसों में होने वाली 11 प्रतिशत मौतों के साथ शीर्ष पर ऐसे ही नहीं आया है।सड़क यातायात और राजमार्ग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट श्रोड एक्सीडेंट्स इन इंडिया 2021श में बताया गया है कि भारत में सड़क दुर्घटनाओं में हर घंटे 18 लोगों की जान जा रही है और औसतन 44 लोग घायल हो रहे हैं। इन हादसों में मश्तकों के 67 प्रतिशत लोग 18 से 45 आयु के हैं। यानी युवाओं की बड़ी संख्या सड़क हादसे का शिकार हो रही है। 2021 में देश में नेशनल हाइवे पर कुल 1,28,825 हादसे हुए थे। अब 2022 की रिपोर्ट आएगी, तब और पता चलेगा कि देश में सड़क हादसे कम हो रहे हैं या बढ़ रहे हैं। मौजूदा हालात देखकर अच्छी रिपोर्ट की उम्मीद कम ही है। सड़क यातायात और राजमार्ग मंत्रालय की वर्षांत समीक्षा 2022 में बताया गया है कि भारत में सड़कों का नेटवर्क लगभग 63.73 किमी है, जो दुनिया में सबसे विशाल है। सरकार ने राजमार्ग विकास पर विशेष जोर दिया गया है। प्रधानमंत्री ने 230,802 करोड़ रुपये से अधिक कीमत की परियोजनाओं का उद्घाटनधशिलान्यास किया है। रिपोर्ट के मुताबिक सरकार ने हिट एंड रन यानी मार कर भाग जाने वाले अपराध में पीड़ितों के लिए मुआवजा भी बढ़ा दिया है। रिपोर्ट को पढ़ें तो लगेगा कि देश कितने चिकने, साफ–सुथरे रास्ते पर चलते हुए विकास की ओर बढ़ रहा है। सरकारें दावा भी तो ऐसा ही करती हैं। भारत के शहरों को शंघाई, टोक्यो, न्यूयार्क जैसा बना देने के कितने सपने लोगों को दिखाई गए हैं। अभी इस साल की शुरुआत में ही मध्यप्रदेश में 6,800 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि वर्ष 2024 तक राज्य में जिस तरह की सड़कों का जाल विकसित किया जा रहा है वो अमेरिका की सड़कों से भी बेहतर होंगी। श्री गडकरी अगले साल तक अमेरिका जैसी सड़कों के ख्वाब दिखा रहे हैं, लेकिन मुख्यमंत्री श्री चौहान ने तो 2018 में ही कह दिया था कि मध्य प्रदेश की सड़कें अमेरिका से कम नहीं हैं। अब जनता समझ ले कि अमेरिका के नाम पर किस तरह उसे मूर्ख बनाया जा रहा है। वैसे जब शिवराज सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश की सड़कों को अमेरिका से बेहतर बताया था, उसके कुछ दिनों बाद एक ट्वीट उन्होंने मिशन इंद्रधनुष के अंतर्गत शतप्रतिशत टीकाकरण के दावे का किया था और लिखा था कि छतरपुर के तीन गांवों तक सड़कें न होने से टीम 10 किमी पैदल, नाव से जंगल व अन्य बाधाओं को पार कर पहुंची। सरकारी दावों के सच–झूठ ऐसे बयानों से खुद ही उजागर हो जाते हैं। राजनैतिक दलों की प्राथमिकता अपने लिए सत्ता का सुरक्षित रास्ता तैयार करने में है, जनता की सुरक्षित यात्रा की परवाह सरकार को कितनी है, यह आए दिन होने वाली बड़ी दुर्घटनाओं से जाहिर हो रहा है।

कर्नाटक चुनाव प्रचार में जनता

कर्नाटक विधानसभा के चुनाव प्रचार का शोर बन्द होने के बाद आज इस राज्य की 224 सीटों पर मतदान होगा। कर्नाटक में मतदान का औसत प्रायः सामान्य ही रहता आया है मगर इसके शहरी इलाकों खासकर बेंगलुरु में मतदान का प्रतिशत पचास के आस–पास ही रहता आया है। इस बार यह अपेक्षा की जा रही है कि मतदान का औसत बढ़ेगा क्योंकि इस शहर को मिला कर करीब कुल सीटें 24 बैठती हैं और इस पूरे इलाके में भाजपा व कांग्रेस की तरफ से जम कर प्रचार किया गया है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने जहां 26 कि.मी. लम्बा रोड शो किया वहीं कांग्रेस की तरफ से श्रीमती प्रियंका गांधी ने भी रोड शो किया और श्री राहुल गांधी ने भी जनता के बीच जाकर जन सम्पर्क किया। परन्तु मूल सवाल पूरे कर्नाटक में मतदान का है और अर्ध शहरी व ग्रामीण इलाकों में इस राज्य में बहुत अच्छा मतदान होता आया है। चुनाव आयोग का जोर प्रायः मतदान के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए रहता है और इसके लिए वह विभिन्न प्रचार माध्यमों का सहारा लेकर अपनी उपस्थिति भी दर्ज कराता आया है। मगर इस बार चुनाव आयोग की चर्चा अन्य विवादों की वजह से ज्यादा हो रही है और कांग्रेस व भाजपा दोनों ही एक–दूसरे की शिकायतें चुनाव आयोग को भेज रही हैं। चुनाव के समय न्यायिक संस्थाएं पूरी तस्वीर से स्वयं को अलग रखती हैं जिससे स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव कराने की जिम्मेदार संवैधानिक संस्था चुनाव आयोग अपना कार्य पूरी निर्भयता के साथ न्यायपूर्ण ढंग से कर सके। संविधान में इसी वजह से चुनाव आयोग को न्यायिक अधिकार भी दिये गये हैं। राज्य में इस बार जिस जोशीले व जुझारूपन से प्रचार किया गया है उससे कुछ राजनीतिक पर्यवेक्षकों को राजनीति की वे मर्यादाएं टूटती नजर आ रही हैं जिनका पालन करने के लिए प्रत्येक राजनीतिक दल प्रतिबद्ध होता है। चुनावों में व्यक्तिगत आलोचना से लेकर राजनीतिक विचार मूलक व सैद्धान्तिक आलोचनाएं होती हैं और प्रत्येक राजनीतिक दल के प्रत्याशी को इसका अधिकार भी होता है मगर इसमें भी मर्यादा का ध्यान इस प्रकार रखा जाता है कि संविधान के किसी घनिर्देश का उल्लंघन न होने पाये। यह देखने की जिम्मेदारी केवल चुनाव आयोग की ही होती है। इसीलिए इस बार चुनाव आयोग के पास शिकायतों की संख्या कुछ ज्यादा लगती है। अगर हम गौर से देखें तो कर्नाटक के चुनाव हमें प्रचार के तरीकों से हम कुछ नतीजे निकाल सकते हैं। सबसे प्रमुख नतीजा यह है कि राजनीतिक विमर्श का विस्तार कुछ इस प्रकार हो रहा है जिसमें जीवन के व्यक्तिगत व सार्वजनिक मुद्दे बुरी तरह गड्ड–मड्ड हो रहे हैं। विकास से लेकर बात निजी आस्था तक की जरूर हो रही है मगर वे मुद्दे गायब हैं जिनका सीधा सम्बन्ध सामाजिक विकास से होता है। कौन नहीं जानता कि कर्नाटक का देश के बैंकिंग उद्योग के विकास में आजादी के बाद से बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस राज्य के वित्तीय उद्यमियों ने देश को बहुत सारे बैंक दिये हैं। इसके साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी इस राज्य का विशेष योगदान रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में इस राज्य ने पूरे देश को दिशा दिखाई है। वहीं सांस्कृतिक विशेष रूप से संगीत के क्षेत्र में इस राज्य ने महान विभूतियों को जन्म दिया है। दक्षिण का कर्नाटक संगीत स्वयं में एक सम्पूर्ण स्वर धारा है।

पं.भीमसेन जोशी व मल्लिकार्जुन मंसूर जैसे शास्त्रीय गायक इसी धरती से आये हैं परन्तु उनकी विशेषता यह रही कि उन्होंने अपने गायन से दक्षिण को उत्तर से जोड़ा। पं. भीमसेन जोशी किराना घराने (उत्तर प्रदेश) के गायक कहलाये और मल्लिकार्जुन मंसूर जयपुर घराने (राजस्थान) के। हमें पूरे चुनाव प्रचार में कर्नाटक की ये विशेषताएं सुनने को नहीं मिली। चुनाव साधारण मतदाता के लिए राजनीतिक पाठशालाएं होती हैं। इन पाठशालाओं में प्रत्येक राज्य की विशिष्ट पहचान के साथ उसे राष्ट्रीय फलक पर उतारने का कार्य राजनीतिज्ञ करते आये हैं।

लोकतन्त्र में प्रत्येक राजनीतिक दल का लक्ष्य विजय जरूर होता है मगर इस व्यवस्था की पहली शर्त यह होती है कि जनता को भी राजनीतिक रूप से सजग बनाया जाये क्योंकि केवल जागरूक जनता ही लोकतन्त्र की रक्षा कर सकती है। लेकिन अनौपचारिक तरीके से जिस प्रकार चुनावों पर धन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है उससे स्थिति एक दिन बेहद चिन्तनीय हो सकती है। चुनाव जिस प्रकार से लगातार खर्चीले होते जा रहे हैं उन्हें देख कर तो यही कहा जा सकता है कि आने वाले समय में कोई चिन्तनशील व सजग और ईमानदार व्यक्ति चुनावों में खड़ा होने की हिम्मत ही नहीं कर सकता। जबकि भारत का संविधान कहता है कि देश के हर वैध नागरिक को चुनाव लड़ने की स्वतन्त्रता है। खर्चीले चुनावों ने तो लोकतन्त्र को धन तन्त्र की दासी बना कर रख दिया है। इसका असर देश की नई पीढ़ी की राजनीतिक चेतना पर पड़े बिना नहीं रह सकता और वह यह कभी नहीं समझ सकता कि राजनीति में सक्रिय होना उसका भी जन्म सिद्ध अधिकार है। हम शिक्षित वर्ग व शहरी क्षेत्रों में कम मतदान की जो शिकायत करते हैं उसके पीछे यह भी बहुत बड़ा कारण है। मगर यह सोचने का काम राजनीतिक दलों का ही है कि वे इस परिस्थिति को कैसे बदलें और लोकतन्त्र को मजबूत बनाने के लिए चुनाव प्रणाली में सुधार करने का कदम किस तरह उठायें। 1974 में जब जयप्रकाश नारायण का आन्दोलन शुरू हुआ था तो चुनाव सुधार उसका प्रमुख एजेंडा था मगर उसके बाद न जाने कितनी सरकारें बदली मगर सभी ने इसे ताले में बन्द रखना ही अपने वजूद के लिए सुरक्षित समझा।

आज का राशिफल

मेष :– आज का दिन शुभ और फलदायी होगा। महत्त्वपूर्ण निर्णय न लेने की सलाह है। यात्रा के योग हैं। लेखनकार्य के लिए अच्छा दिन है। महिला के साथ विवाद में न उतरें।

वृषभ :– मन को स्थिर रखने की सलाह गणेशजी देते हैं, क्योंकि अर्निणय की मनोदशा से अवसर गवां सकते हैं। प्रवास का आयोजन टाल दें। नए कार्य प्रारंभ न करें।

मिथुन :– लक्ष्मीजी की कृपा से दिन लाभदायी होगा। उत्तम भोजन, सुंदर वस्त्र व अपनों के साथ से दिन आनंददायी होगा। धन अधिक व्यय न करें।

कर्क :– कोई भी महत्त्वपूर्ण निर्णय न लें। संबंधियों से मनमुटाव हो सकता है। वाणी पर संयम रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मानहानि एवं धनहानि से बचें।

सिंह :– आज का दिन लाभदायी है। मित्रों से लाभ और पर्यटन की संभावना है। हाथ आया अवसर जा सकता है, इसलिए निर्णय टाल दें। व्यापार एवं आर्थिक लाभ के योग हैं।

कन्या :– आज दिन शुभ है। नए कार्य संपन्न होंगे। व्यापारी व नौकरीपेशा लोगों के लिए समय अच्छा है। व्यापार में लाभ व नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। पिता से लाभ होगा।

तुला :– व्यावसाय में लाभ की संभावना है ऐसा गणेशजी कहते हैं। नौकरी व व्यापार में सहकर्मियों से सहयोग नहीं मिलेगा। लंबी यात्रा का आयोजन हो सकता है। अस्वस्थ रहेंगे।

वृश्चिक :– आज शांति व सावधानीपूर्वक रूप से रहने की गणेशजी की सलाह है। नए कार्यों में असफलता के योग हैं। क्रोध पर संयम रखें। सरकार विरोधी प्रवश्तियों से दूर रहें।

धनु :– आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा। सहवास का आनंद मिलेगा। प्रवास, पर्यटन होगा। लेखनकार्य के दिन अनुकूल है। साझेदारी से लाभ होगा।

मकर :– व्यापार में विकास के लिए आज का दिन लाभकारी रहेगा। धन के लेनदेन में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घर में सुख–शांति का वातावरण बना रहेगा।

कुंभ :– आप की वाणी व विचारों में शीघ्र परिवर्तन होगा। बौद्धिक चर्चा में शामिल होंगे। आकस्मिक खर्च की आशंका है। पाचन न होने जैसी बीमारियों से परेशान होंगे।

मीन :– गणेशजी कहते हैं कि आप में उत्साह व स्फूर्ति की कमी होगी। परिजनों के साथ विवाद न करें। अस्वस्थ महसूस करेंगे। नौकरी में चिंता रहेगी। धन व कीर्ति की हानि न हो ध्यान रखें।

और बदरंग हुआ चेहरा

पिछले साल तक वह प्रेस फ्रीडम के लिहाज से समस्याग्रस्त देशों की श्रेणी में था। अब उसे उन देशों के बीच रखा गया है, जिनकी स्थिति अत्यंत गंभीर मानी गई है। इस रिपोर्ट में कही गई कुछ बातें ध्यान खींचती हैं।इस बार विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर जारी हुए प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत का चेहरा कुछ और बदरंग दिखा है। यह इंडेक्स पेरिस स्थित संस्था रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर जारी करती है। पिछले कई वर्षों से इस सूचकांक पर भारत का दर्जा गिरता गया है। पिछले साल इस सूची में 150वें नंबर पर था। इस बार वह 11 स्थान गिर कर 161वें नंबर पर पहुंच गया। इस इंडेक्स में भारत अब सबसे निचली श्रेणी में है। पिछले साल तक वह प्रेस फ्रीडम के लिहाज से समस्याग्रस्त देशों की श्रेणी में था। अब उसे उन देशों के बीच रखा गया है, जिनकी स्थिति अत्यंत गंभीर मानी गई है। इस रिपोर्ट में कही गई कुछ बातें ध्यान खींचती हैं। मसलन, यह कि भारत में कुछ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के धनी–मानी मित्रों ने मीडिया पर कब्जा जमा लिया है। कहा गया है कि कभी भारतीय प्रेस को अपेक्षाकृत प्रगतिशील समझा जाता था, लेकिन हिंदू राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री के सत्ता में आने के बाद स्थितियां बदल गईं। इसमें बीबीसी के दफ्तर पर मारे गए छापे का जिक्र है और उसका सीधा संबंध बीबीसी पर गुजरात दंगों के बारे में दिखाई गई डॉक्यूमेंटरी से बताया गया है।रिपोर्ट कहती है कि वैसे तो दुनिया भर में प्रेस की आजादी के लिए संकट पैदा हो रहा है। दुष्प्रचार, एकतरफा प्रचार और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ने पत्रकारिता के लिए खतरे पैदा कर दिए हैं। इन खतरों के बीच सच और झूठ, सही और गलत की पहचान मुश्किल हो गई है। मगर इन विश्वव्यापी प्रवृत्तियों के बीच कुछ देश ऐसे हैं, जहां हालात बेहद गंभीर रूप ले चुके हैं। ऐसे देशों में रूस, तुर्किये और ताजिकिस्तान के साथ–साथ भारत का भी जिक्र किया गया है। पिछले वर्षों के तजुर्बे के आधार पर यह तो साफ है कि मौजूदा भारत सरकार ऐसी रिपोर्टों की तनिक भी परवाह नहीं करती। उसके बाद ऐसी हर रिपोर्ट का तैयारशुदा जवाब है, जिसमें भारत का दर्जा गिरता दिखाया जाता है। मगर भारत की सत्ताधारी पार्टी ही और आज की सरकार ही भारत नहीं हैं। एक देश और लोकतांत्रिक समाज के तौर पर भारत के लिए यह रिपोर्ट पहले से जारी चिंताओं को और बढ़ा गई है।

वृद्ध माँ परिवार की बड़ी संपत्ति

मां शब्द बड़ा ही वृहद और विराट है। पूरी सृष्टि इसमें समाहित होती है। मां ,धरती, जननी, धरा ,माते इतना पवित्र शब्द है कि संताने उनका ऋण कभी नहीं चुका सकती हैं । यूरोप और पश्चिम देश इतने अभागे हैं कि वे अपने माता और पिता को वृद्धा आश्रम में छोड़ आते हैं या उन्हें छोड़कर स्वयं संताने दूर चली जाती हैं। स्विजरलैंड जैसे खूबसूरत देश में बुजुर्ग दंपत्ति इच्छा मृत्यु लेकर अपना अंतिम समय व्यतीत करते हैं, पर भारत सांस्कृतिक संस्कारी रूप से समृद्ध है तथा मां–बाप संतानों के पास रहते हैं। कुछ प्रतिशत छोड़ दिया जाए महानगरों में संताने मां और पिता को वृद्ध आश्रम में रखने का उपक्रम करने लगे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की यह अंधी नकल बुजुर्ग दंपतियों के लिए बड़ी ही मार्मिक और हृदय विदारक होती है। वृद्ध दंपतियों का अनुभव परिवार के विकास समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह विडंबना है मनुष्य अत्यंत अनुभवी परिपक्व,प्रबुद्ध शालीन हो जाता है तब उसके अनुभव कार्य की लगन सहनशीलताऔर परिपक्व मस्तिष्क का हम सदुपयोग नहीं करते उन्हें अवकाश प्रदान कर देते हैं यह भी इस सिक्के का दूसरा पहलू है कि ईस उम्र में शरीर में थकावट और वृद्धावस्था आ जाती है पर हम उन्हें सम्मान और यथा योग्य महत्व देकर उनके मार्गदर्शन और परामर्श का यथोचित लाभ लेकर अपने जीवन व्यवसाय अथवा नई नीतियों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, पर अमूमन ऐसा होता नहीं है। वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्याओं से गिरी हुई अवस्था माना जाता है, क्योंकि इस अवस्था में वृद्धों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।समय की रफ्तार के साथ समाज में अनेक परिवर्तन होने लगे हैं। नवीन पीढ़ी के लोग पुराने विचारों के लोगों का उनके जीवन में हस्तक्षेप उचित ना समझ कर बर्दाश्त नहीं करते हैं,इसी कारण युवा पीढ़ी बुजुर्गों और वृद्धों के विचारों की गहन उपेक्षा करने लगते हैं और बुजुर्गों को लगता है कि उनकी समाज में उपयोगिता धीरे धीरे कम हो रही है। जीवन का सांध्य काल आने पर मनुष्य कई समस्याओं से घिर जाता है। सबसे बड़ी समस्या शारीरिक क्षमता में कमी आ जाने की है, शरीर की सभी इंद्रियां धीमी पड़ जाती हैं,अनेक प्रकार की व्याधियों से शरीर घिर जाता है और मनुष्य धीरे–धीरे शरीर पर नियंत्रण खोता जाता है। उम्र के वृद्धावस्था के पड़ाव पर अनेक शारीरिक बीमारियों के साथ–साथ मूल समस्या मानसिक व्याधि की होती है। सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों में वेतन भोगी कर्मचारी को एक निर्धारित आयु के बाद सेवानिवृत्त कर दिया जाता है और यह मान लिया जाता है कि वह व्यक्ति अब शारीरिक एवं मानसिक श्रम के योग्य नहीं रहा चाहे वह व्यक्ति स्वस्थ ही क्यों ना हो। इसके बाद उस व्यक्ति के जीवन में अनेक कठिनाई आने लगती हैं। जैसे ही व्यक्ति की आर्थिक उपयोगिता समाज में कम होने लगती है, वह समाज के लिए अनुपयोगी मान लिया जाता है और इस अवस्था में पहुंचने के बाद मानसिक तनाव की स्थिति बनने लगती है। लोगों के संपर्क में न रहना, सहयोगी तथा मित्रों की मृत्यु भी मानसिक तनाव का बड़ा कारण होती है। आत्मविश्वास की धीरे–धीरे कमी होने लगती है, जिससे मानसिक विकृति अकेलापन आदि जैसे रोगों का निर्माण होने लगता है। इस अवस्था में मान सम्मान की कमी की समस्या तो होती ही है, दूसरी तरफ सीमित तथा अल्प धन की उपलब्धता के कारण आर्थिक कष्ट भी वृद्धों को उठाना पड़ता है। इसके साथ ही परिवार तथा समाज की नजरों में व्यक्ति अनुपयोगी, बोझ, फालतू समझा जाने लगता है, जिससे बुजुर्ग व्यक्ति के मन में एक प्रकार की वितृष्णा आने लगती है। और कई बुजुर्ग इस अवहेलना को ना बर्दाश्त कर आत्महत्या तक कर बैठते हैं। जो व्यक्ति कुछ समय पहले तक महत्वपूर्ण था, विशिष्ट था वह अचानक ही बोझ समझा जाने लगता है। उसके मान सम्मान एवं भावनाओं का महत्व बहुत कम हो जाता है। भागदौड़ वाली इस जिंदगी में युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों से एक दूरी बनाना शुरु कर देती है और वह व्यक्ति अकेला ही रह जाता है। जब मनुष्य अपने को एकाकी समझने लगता है तो यह उसके जीवन का सर्वाधिक कठिन समय एवं पल होता है। आत्मविश्वास जनित प्रेरणा की कमी वृद्धावस्था को बोझिल बना देती है। व्यक्ति की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है, दूसरों पर निर्भरता बढ़ने लगती है। नई पीढ़ी द्वारा उसे अकेला छोड़ दिया जाता है। यही परिस्थिति वृद्धा अवस्था के लिए एक अभिशाप की तरह होती है। वृद्धावस्था में मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक कष्ट के प्रमुख कारणों में से संयुक्त परिवार का विघटन भी है। युवा पीढ़ी द्वारा अपने मां–बाप से अलग होकर रहने की चाहत हमारे देश में एक गंभीर समस्या पैदा करती है। वृद्ध व्यक्ति या दंपत्ति को जिस आयु में पुत्र, पुत्रियों की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है, ऐसे समय में पुत्र द्वारा उनकी देखभाल छोड़कर अलग रहने के लिए अलग मकान बनाना या किराए पर रहना, उस दंपत्ति या व्यक्ति को मानसिक रूप से प्रताड़ित भी करती है। भारत देश वही देश है यहां की संस्कृति में परिवार के बुजुर्ग को भगवान के समान माना जाता था, किंतु संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के कारण आज की नई युवा पीढ़ी ना तो बड़ों के अनुशासन में रहना चाहती है नहीं उन्हें किसी प्रकार का आदर सम्मान देना चाहती है। औद्योगिकरण और विसंस्कृतिकरण प्रणाली के फल स्वरुप युवा पीढ़ी के रहन–सहन एवं जीवन शैली में तीव्र बदलाव देखा जा रहा है। इस युग में व्यक्ति जितना अपने कार्यों में व्यस्त हो गया है कि उसको परिवार के साथ बैठने, रहने की फुर्सत ही नहीं मिल पाती। भारत में बदलते परिवेश में ओल्ड एज होम की अवधारणा तेजी से बल पकड़ती जा रही है। नई पीढ़ी तरह पुरानी पीढ़ी के बीच एक तरह कम्युनिकेशन गैप भी आ जाता है, जो बुजुर्गों के लिए एक बड़ी समस्या होती है। बुजुर्ग दंपत्ति हो या व्यक्ति के पास जब तक धन रहता है तब तक उनके पुत्र, पुत्री उनका ख्याल रखते हैं और जब वह धनहीन हो जाते हैं, तो उन्हें नकार दिया जाता है ।यह एक बड़ी समस्या आज बुजुर्गों के सामने यक्ष प्रश्न बनकर खड़ी है। व्यक्ति को बुजुर्ग अवस्था में जब सबसे ज्यादा धन की आवश्यकता होती है तब उसके पास धन नहीं होता है। यह धन की कमी उपेक्षा का बड़ा कारण भी बनती है। युवा पीढ़ी का व्यक्तिगत स्वार्थ एवं धन के प्रति आकर्षण भी बुजुर्गों के प्रति प्रभाव तथा उपेक्षा का मूल कारण होता है। व्यक्ति का जब सर्वश्रेष्ठ काल होता है तब उपेक्षित और समस्या ग्रस्त होकर अवसाद ग्रस्त हो जाता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि रॉबर्ट ब्राउनिंग वृद्धावस्था के बारे में लिखा है। मेरे साथ रहो, रुको वृद्ध हो, अभी जीवन का सर्वोत्तम शेष है। वृद्ध व्यक्ति भी मानव है, उसे भी संवेदना, सहानुभूति और प्यार की आवश्यकता होती है। नई पीढ़ी को चाहिए कि वृद्धों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें उनकी लगातार सेवा करनी चाहिए, उनके मार्गदर्शन उनका परामर्श परिवार तथा समाज के लिए जल कल्याणकारी होता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार उनका आशीर्वाद उनकी शुभकामनाएं लोक मंगलकारी होती हैं यह माना जाता है कि बुजुर्ग का आशीर्वाद ईश्वर के आशीर्वाद जैसा ही होता है।**—संजीव ठाकुर**

पोलिंग पार्टियों की रवानगी के बारे में जानकारी लेते डीएम नितीश कुमार

- मतदेय स्थलों पर पहुंची पोलिंग पार्टियां, वोटिंग आज
- 466 मतदेय स्थलों पर होगा मतदान, 49 सेक्टर मजिस्ट्रेट भी तैनात

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। नगरीय निकाय चुनाव के दूसरे और अंतिम चरण के लिए गुरुवार को होने वाले मतदान के लिए बुधवार को पोलिंग पार्टियों मतदेय स्थलों पर पहुंच गई। जिले के आठ नगरीय निकाय चुनाव के लिए पोलिंग पार्टियों को जिला निर्वाचन अधिकारी डीएम नितीश कुमार की मौजूदगी में रवाना किया गया।

जिला निर्वाचन अधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग उ0प्र0 के निर्देशानुसार 11 मई 2023 को होने वाले जनपद के नगर निकायों, नगर निगम, नगर पालिका परिषद एवं नगर पंचायत के सदस्यों, पार्षदों, अध्यक्षों एवं महापौर के सामान्य निर्वाचन को सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न के दृष्टिगत समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है। जनपद में समस्त नगर निकायों में कुल 169 वार्ड के 169 मतदान केन्द्रों पर कुल 467 मतदान स्थलों पर 11 मई 2023 को पूर्वान्ह 7 बजे से मतदान प्रारम्भ होगा जो अपरान्ह 6 बजे तक चलेगा। मतदान प्रक्रिया को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु 06 सुपर जोनल, 19 जोनल, 50 सेक्टर तथा 36 स्टेटिक मजिस्ट्रेट लगाये गये है। इसी के साथ ही 29 रिटर्निंग आफिसर, 47 सहायक रिटर्निंग आफिसर भी लगाये गये है। सभी रिटर्निंग आफिसर्स सहायक रिटर्निंग आफिसर्स व मजिस्ट्रेटगण को अपने अपने क्षेत्रअ्मतदान केन्द्र से सम्बंधित अधिकारियों एवं आपस में समन्वय स्थापित कर अपने–अपने दायित्वों का सम्यक निर्वहन करने हेतु निर्देशित किया गया है। मतदान एवं मतगणना को शांति पूर्वक सकुशल सम्पन्न कराने हेतु जनपद स्तर पर निर्वाचन नियंत्रण शिकायत निवारण हेतु कन्ट्रोल रूम स्थापित कराया गया है, जो 24 घंटे निर्वाचन की प्रक्रिया समाप्ति तक अनवरत कार्यरत रहेगा। इसके नोडल अधिकारी मुख्य राजस्व अधिकारी चन्द्रशेखर मिश्र (9454419036) बनायें गये है। कन्ट्रोल रूम अतिरिक्त मजिस्ट्रेट नया भवन कलेक्ट्रेट परिसर में स्थापित किया गया है, जिसका लैंडलाइन नम्बर–05278–299325, 299326 है। किसी भी मतदान केन्द्र मतदान स्थल पर कोई समस्या आने पर इन नम्बरों पर सम्पर्क किया जा सकता है। जिला निर्वाचन अधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि जनपद में समस्त नगर निकायों में कुल 169 वार्ड के 169 मतदान केन्द्रों पर कुल 467 मतदान स्थलों पर दिनांक 11 मई 2023 को पूर्वान्ह 7 बजे से मतदान प्रारम्भ होगा जो अपरान्ह 6 बजे तक चलेगा। उन्होंने बताया कि जनपद में नगर निगम अयोध्या में कुल 60 वार्ड है जिसमें 91 मतदाता केन्द्र व 279 मतदान स्थल बनाए गए हैं। नगर निगम क्षेत्र में कुल 3,32,290 मतदाताओं में 1,74,975 पुरुष मतदाता व 1,57,315 महिला मतदाता अपने–अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इसी तरह नगर पालिका परिषद रूदौली कुल 25 वार्ड है, जिसमें 21 मतदान केंद्र व 59 मतदान स्थल बनाए गए हैं। इस वार्ड में कुल 59,959 मतदाताओं में से 30,563 पुरुष मतदाता व 29,396 महिला मतदाता अपने–अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। नगर पंचायत गोसाईगंज में 12 वार्ड हैं, जिसमें 3 मतदान केंद्र तथा 12 मतदान स्थल बनाए गए हैं। इस वार्ड में कुल 11,390 मतदाताओं में से 6013 पुरुष मतदाता व 5377 महिला मतदाता अपने–अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। नगर पंचायत भरतकुण्ड भदरसा में 18 वार्ड हैं, जिसमें 15 मतदान केंद्र व 35 मतदान स्थल बनाए गए हैं।

हरदोई में फिर आया लव जिहाद का मामला

हरदोई। लड़के ने नाम बदलकर हिंदू लड़की को प्रेम जाल में फंसा लिया। देर शाम सांडी कस्बे में गश्त कर रही पुलिस की नजर मुंह पर कपड़ा बांधे प्रेमी युगल पर पड़ी तो उन्हें शक हुआ। पूछताछ के बाद पुलिस ने लड़की को परिजनों के हवाले कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार,फर्रुखाबाद जनपद के सदर कोतवाली निवासी उसमा पुत्र शराफ अली ने हिंदू नाम उमेश रखकर सांडी कस्बे की एक लड़की से एक साल पहले फेसबुक पर दोस्ती की। छह माह पूर्व दोनों ने एक–दूसरे के मोबाइल नंबर लिए। धीरे–धीरे बातचीत बढ़ी तो दोनों में प्यार हो गया। प्रेम–प्रसंग परवान चढ़ा तो दोनों ने शादी करने की योजना बनाई,वादे के मुताबिक, उसमा फर्रुखाबाद से सांडी आ गया और देर शाम लड़की को साथ लेकर जाने के लिए बस का इंतजार करने लगा। इस दौरान गश्त कर रही पुलिस को मुंह पर कपड़ा बांधे खड़े प्रेमी युगल पर शक हो गया और पूछताछ करने लगी। लड़की को परिजनों को सौंपा गया, पुलिस की पूछताछ में दोनों घबरा गए। पुलिस दोनों को पकड़कर थाने ले गई। यहां पर पुलिस को सारी कहानी समझ में आ गई। थानाध्यक्ष राजदेव मिश्र ने बताया कि लड़की को परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

गर्भवती महिलाओं को चार प्रसव जांच अवश्य कराना चाहिएःसीडीओ

सभी सीएचसी पीएचसी में मना प्रधानमंत्री मातृत्व अभियान दिवस

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में शहरी ग्रामीण सीएचसी,पीएचसी व बाल महिला केन्द्रों पर बुधवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस मनाया गया। जिसमें मुख्य विकास अधिकारी रिया केजरीवाल ने सीएचसी सिल्वर जुबली में पीएमएसएमए दिवस का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने सीएचसी अधीक्षक डा. प्रियंका यादव और उपस्थित गर्भवतियों से बात करते हुए कहा कि गर्भवती को स्वास्थ्य केंद्रों पर कम से कम चार प्रसव पूर्व जांच जरूर करानी चाहिए। इससे उच्च जोखिम की गर्भावस्था की पहचान हो जाती है और समय से इलाज हो जाता है। उच्च जोखिम की गर्भावस्था की समय से पहचान और प्रबंधन से हम जच्चा–बच्चा दोनों को ही स्वस्थ रख सकते हैं। वहीं जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी योगेश रघुवंशी ने बताया कि नौ तारीख को अवकाश होने के कारण पीएमएसएमए दिवस जनपद में 10 तारीख को मनाया गया। उन्होंने कहा इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य दूसरी और तीसरी तिमाही की

गर्भवती को प्रसव पूर्व कम से कम एक बार एमबीबीएस चिकित्सक की देख रेख में निरूशुल्क जांच एवं उपचार उपलब्ध कराना है ताकि उच्च जोखिम की गर्भावस्था (एचआरपी) की पहचान कर उसे समय से इलाज उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने कहा कि गर्भवती की हीमोग्लोबिन, पेशाब, सिफलिस व एचआईवी की जाँच और अल्ट्रा साउंड की सुविधा मिलती है गर्भवती की जांच कर स्वास्थ्य के अनुसार मातृ एवं शिशु सुरक्षा (एमसीपी) कार्ड पर लाल एवं हरा डॉट लगा दिया जाता है। हरे डॉट का मतलब होता है कि गर्भवती में कोई भी खतरे के लक्षण नहीं हैं जबकि लाल का तात्पर्य है कि उच्च जोखिम की गर्भावस्था है। जिला स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सूचना अधिकारी ने बताया कि सीएचसी सिल्वर जुबली में कुल 90 गर्भवती की जांच हुई और 21 गर्भवती को अल्ट्रा साउंड के लिए ई–वाउचर दिए गए। वहीं जिला कार्यक्रम प्रबंधक सतीश यादव ने बताया कि अभी तक पीएमएसएमए दिवस माह की नौ और 24 तारीख को मनाया जाता था लेकिन अब यह माह की एक और 16 तारीख को भी मनाया जाएगा।

संक्षिप्त खबरे

आग लगने से 4 दुकान और 10 बाइक जलकर राख

हरदोई। कछौना इलाके में आग लगने से 4 दुकान और 10 बाइक जलकर राख हो गई। संडीला इंडस्ट्रियल एरिया में हुए हादसे से लोगों में हड़कंप मच गया। आग ने पहले किराना की दुकान को जद में लिया। फिर तांडव मचाते हुए 10बाइक समेत चार दुकानों को जलाकर राख कर दिया। कड़ी मशक्कत के बाद दमकलकर्मियों ने आग पर काबू पाया है। बताया गया कि कछौना के संडीला इंडस्ट्रियल एरिया में रैंसो निवासी सागर की किराना दुकान है। जिसमें अचानक आग लग गई जिसे आसपास के लोगों ने बुझाने का प्रयास किया। लेकिन तब तक दुकान में रखे सिलेंडर में विस्फोट हो गया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। जिसने 4 दुकानों और 10 बाईकों को अपनी जद में ले लिया। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया है। लेकिन तब तक 4 दुकान और 10 बाइक जलकर राख हो गई। बताया गया, ग्रीन प्लाईवुड कंपनी में कार्य करने वाले मजदूरों ने बाइक पास में बनी झोपड़ी में खड़ी की थी। जिसमें आग लगने से 10 बाइक और चार दुकानें जलकर राख हो गई। आग लगने के कारणों की पुलिस जांच में जुटी है। हादसे में 15 लाख रूपये के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। एएसपी पूर्वी नृपेंद्र कुमार ने बताया कि कछौना के इंडस्ट्रियल एरिया में अचानक आग लग गई। जिसकी जद में आने से 4 दुकानें और 10बाइक जलकर राख हो गई। 15लाख रूपये के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। पुलिस आग लगने की घटना के पहलुओं की जांच कर रही है।

किसान के भूसा स्टोर में लगी आग, भूसा छप्पर चोकर की बोरी स्वाहा

कछौना,हरदोई। कोतवाली कछौना की ग्राम सभा कलौली के ग्राम भुलई खेड़ा में बालक राम की चौपाल में बच्चों से खेल खेल में आग लग गई। जिसमें किसान का भूसा छप्पर जलकर स्वाहा हो गया। मिली जानकारी के अनुसार ग्राम भुलई खेड़ा के निवासी किसान बालकराम की चौपाल गांव के बाहर है, जहां पर किसान जानवर बांधता है। जानवरों के लिए भूसा का स्टॉक रखता है। बुधवार को बच्चों की गलती से चौपाल में आग लग गई। जिससे भूसा का स्टाक छप्पर चोकर की बोरी जलकर स्वाहा हो गयी। ग्रामीणों ने अपने प्रयासों से आग को बुझा लिया, थोड़ी सी चूक से किसान का नुकसान हो गया। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची, राजस्व कर्मी ने नुकसान का आकलन करके उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट प्रेषित करने की बात कहीं।

शारदा नहर में मिला अज्ञात महिला का शव

राही,रायबरेली। क्षेत्र के रघुनाथपुर कटैली गांव के पास शारदा सहायक नहर से एक युवती का शव बरामद किया गया है। नहर में शव मिलने के बाद आसपास के क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। शव की पहचान नहीं हो पाई है। बुधवार की सुबह गांव के लोग नहर के पास गए तो नहर के किनारे पानी में एक युवती का शव पड़ा हुआ था। नहर में शव मिलने की खबर फैलते ही आस–पास के गांव में हड़कंप मच गया और मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई। मृतका युवती की उम्र करीब 25 साल बताई जा रही है। वह बैगनी रंग की कुर्ती और हरे रंग की सलवार पहने हुए थी। ग्रामीणों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नहर से बाहर निकाला और उसे कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। बताया जाता है कि शव कई दिन पुराना है । जिसके कारण शव का कुछ भाग सड़ गया है। कोतवाल राजेश सिंह ने बताया कि शव बहते हुए यहां पहुंचा है। शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया जा रहा है। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

कब्रिस्तान की भूमि पर प्रधान कर रहा कब्जा

ऊंचाहार,रायबरेली। प्रधान द्वारा कब्रिस्तान की भूमि को जबरन खुदवाकर उस पर कब्जा किया जा रहा है, कोतवाली में मामले की शिकायत की गई है। मामला कोतवाली क्षेत्र के धौरहरा गांव का है, गाँव निवासी कैलाश व हरिश्चंद्र का कहना है कि उनके परिवार के व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसे दफनाने के लिए गाँव में ही कब्रिस्तान की भूमि है,जिस पर पड़ोसी ग्राम पंचायत रोहनियां के ग्राम प्रधान द्वारा जेसीबी मशीन से खुदवाकर उस पर कब्जा किया जा रहा है, पीड़ितों ने बुधवार को कोतवाली में मामले की तहरीर दी है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि तहरीर मिली है,जांच कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

दुर्व्यवस्थाओं के चलते 3 दिनों से नहीं हो रही गन्ने की तौल, किसान परेशान

सिधौली (सीतापुर)। जवाहर चीनी मिल रामकोट से समन्धित सरौरा द्वितीय के गन्ना तौल केंद्र पर किसान अपनी गन्ना से लदी ट्रैक्टर ट्रालियों के साथ तीन दिनों से तौल होने के इंतजार में खड़े हैं। तौल प्रबंधन ट्रांसपोर्ट व्यवस्था उपलब्ध न होने की समस्या बता रहा है। सेंटर पर गन्ना के ट्रालियों के साथ तीन दिनों से खड़े किसानों रामहेत निवासी नरसिंहपुर ने बताया कि उनके पास तीन ट्रालियों की पर्ची है। लेकिन उनका गन्ना नहीं तौल जा रहा है। जिससे उनका गन्ना सूख रहा है किसान बर्बाद हो रहा। इसी प्रकार किसान रमेश, विजय, शैरे, अर्जुन पंडा, करतार सिंह, पुतान सिंह, रामखेलावन आदि किसानों का कहना है कि वह इलाके के विभिन्न गांवों से गन्ना लेकर सेंटर पर आए हैं। कोई दो दिन से तो कोई तीन दिन से सेंटर पर घर बार छोड़ कर पड़ा हुआ है। जिनमें से कई किसानों के पास मिल की पर्ची भी है। किसानों का यह भी आरोप है कि गन्ना तौल केंद्र पर प्रति ट्राली दो कुंतल कटौती की जा रही है। जो कि गलत है किसानों का कहना है कि लगभग 50 ट्रालियां यहाँ पर खड़ी है। इस सम्बंध में जब तौल बाबू पंकज सिंह ने बताया कि चीनी मिल ने तौल कर दी है।

वाह री सरकार जमकर हुआ भ्रष्टाचार, प्रधान और अधिकारियों ने किया बंदरबांट

प्रयाग दर्पण संवाददाता

पहला (सीतापुर)। उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर के विकास खण्ड पहला की ग्राम पंचायत सैर में विकास के लिए भेजे गए धन का सही उपयोग प्रधानों व सचिवों ने नहीं किया। गांव के लोगों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि किसी राजपत्रित अधिकारी के द्वारा गांव में निष्पक्ष तरीके से जांच कराई जाए तो पूरा मामला खुलकर सामने आ जायेगा। गांव का विकास हो, गांव के लोगों को छोटी–छोटी समस्याओं को लेकर परेशान न होना पड़े। इसके लिए ग्राम पंचायतों को धन दिया गया और तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। लेकिन गांव के लोगों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है। प्रधान व सचिव ऐसे लोगों को लाभ दे रहे हैं, जो उनके करीबी है। इसको लेकर ग्रामीणों में आक्रोश फैल रहा है और गांव में कराये गये कार्यों की निष्पक्ष जांच कराने की मांग उठाई जा रही है। ग्रामीणों द्वारा गुपचुप बातों में चर्चा की जा रही है कि गांव में प्रधान सचिव ने खूब धन का

बन्दरबांट किया है और प्रधान गांव में झांकने तक नहीं आ रहे है। ग्रामीणों ने बताया कि योजनाओं से वंचित रह गए लोगों ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सुविधा शुल्क लिए जाने की शिकायत भी करी है। विकासखंड के ग्राम पंचायत सैर के प्रधान तथा सचिव पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप ग्रामीणों ने लगाए गए हैं। गांव के लोगों ने अफसरों से मिलकर गांव में हुए घोटालों की लंबी फेहरिश्त बतायी है। वहीं धांधली के आरोपों से घिरे ग्राम प्रधान चुप्पी साधे बैठे हैं। गांव के ग्रामीणों ने शिकायत करते हुए विकास कार्यों और आवास योजना में धन उगाही का आरोप लगाते हुए कहा कि जो प्रधान के खास हैं। उनको ही लाभ दिया जा रहा है और चुनावी रंजिश मानते हुए प्रधान भेदभाव कर रहे हैं। इसमें ग्राम प्रधान और सेक्रेटरी पर धांधली के भी आरोप लगाए गये है। ग्रामीणों ने यह भी बताया है कि विकास के नाम पर लाखों रुपये डकार लिए गये। स्वच्छ भारत मिशन में भी जमकर धांधली हुई है शौंचालयों में पीला ईंट का प्रयोग किया गया है और सभी शौंचालय मानक विहीन बनाए गये हैं।

पुलिस ने दो जुआरियों को किया गिरफ्तार

बछरावां,रायबरेली। पुलिस ने मंगलवार रात आईपीएल मैच पर ऑनलाइन सट्टा खिलाने के आरोप में दो सटोरियों को गिरफ्त में लिया है । दोनों सटोरी इचौली गांव के बताये जा रहे हैं । पुलिस तफ्तीश की बात कहकर पूरी जानकारी देने से मुकर रही है । इचौली गांव से मंगलवार रात पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर तीन लोगों को पकड़ा है । वहीं ग्रामीण दबी जुबान यह भी कह रहे हैं की सट्टेबाजी के आरोप में पाँच लोगों को गांव से पुलिस पकड़ कर ले गई है । आरोपित क्षेत्र में समूह बनाकर ऑनलाइन बैटिंग कराते हैं । हर मैच के साथ ही विकेट , छक्कों व चौकों पर भी सट्टा लगवाते थे । फिलहाल पुलिस मामले की तफ्तीश कर रही है। इस दरमियान पुलिस कुछ कहने से बचती दिखाई दे रही है । थानाध्यक्ष बृजेश राय ने बताया कि चौकी इंचार्ज चुरुवा मामले की तफ्तीश कर रहे हैं । दो लोगों को सट्टेबाजी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है ।

महिला कांस्टेबल का अश्लील वीडियो बनाकर वायरल करने पर मुकदमा दर्ज

कानपुर। कानपुर में पुलिस लाइन के सरकारी क्वार्टर में महिला कांस्टेबल और उसके अधिवक्ता मित्र का अश्लील वीडियो बनाकर वायरल करने के मामले में कोतवाली पुलिस ने दो मामले दर्ज किए हैं। एक मामला सिपाही की ओर से दर्ज किया है जिसमें सिपाही ने पति आरपीएफ सिपाही नवीन यादव और अज्ञात पत्रकार के आरोपी बनाया गया है। वहीं दूसरे केस में नवीन की ओर से महिला सिपाही पर झूठे केस में फंसाने का दबाव बनाकर वसूली का आरोप लगाया गया है। महिला सिपाही की ओर से दर्ज मामले में पीड़िता का आरोप है नवीन से उसका लंबे समय से पारिवारिक विवाद चल रहा है। दहेज उत्पीड़न व मारपीट का एक मुकदमा दर्ज है जिसमें नवीन के अलावा उसके सास,ससुर भी आरोपी है। नवीन ने 3 मई को डायल 112 की पीआरवी को भ्रमित कर गलत सूचना दी और जबरदस्ती दरवाजा खुलवाकर घर में घुस गया। इस दौरान अश्लील फब्तियां कसी व वह बाथरूम से जिस हाल में बाहर निकली थी, उसी हाल में वीडियो बनाकर वायरल करने की धमकी देते हुए दहेज उत्पीड़न का पहले का दर्ज मुकदमा वापस लेने की धमकी दी। केस वापस न लेने पर नवीन यादव ने वह वीडियो वाट्सएप ग्रुप,यूट्यूब,फेसबुक आदि पर डाल दिया। आरोप लगाया कि वह बदनाम कर आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर रहा है। वहीं, पति नवीन यादव की तरफ से लिखाए गए केस में नवीन ने कहा कि महिला सिपाही लंबे समय से झूठे केस में फंसाने का डर दिखाकर वसूली करने के लिए दबाव बना रही है। साथ ही जान से मारने की धमकी और गाली गलौज भी कर रही है। इंस्पेक्टर कोतवाली सूर्यबली पांडेय ने बताया कि दोनों ही पक्षों की तहरीर के आधार पर मामले दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ट्रक की चेचिस में मिला 63.25 किग्रा गांजा, दो तस्कर गिरफ्तार

कानपुर। महाराजपुर पुलिस और क्राइम ब्रांच की टीम ने अंतरराज्यीय गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपितों के पास से 63.25 किग्रा गांजा बरामद किया। इसकी अनुमानित कीमत 60 लाख रुपये आंकी गई है। टीम को ज्वाइंट सीपी आनंद प्रकाश तिवारी ने पचास हजार रुपये इनाम देने की घोषणा की है।

झारखंड से गांजा लाकर शहर में खपाते थे डीसीपी क्राइम शिवाजी ने बुधवार को प्रेस वार्ता में बताया कि मंगलवार की रात महाराजपुर में पुलिस और क्राइम ब्रांच की टीम वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक ट्रक,जिसमें नई चेचिस लगी थी,वहां से गुजरी। पुलिस टीम ने ट्रक रुकवाया और तलाशी ली तो चेचिस में 31 पैकटों में 63.25 किग्रा गांजा बरामद हुआ। इसके साथ ही झारखंड की नंबर प्लेट लगा ट्रक चेचिस और तीन मोबाइल फोन भी मिला। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि आरोपित झारखंड से गांजा लाकर शहर में खपाते थे।

शादी के दिन ही दुल्हे ने दुल्हन की कर दी हत्या, गिरफ्तार

लखनऊ । राजधानी में एक प्रेमी दूल्हे ने शादी के दिन ही दुल्हन की कुकरैल जंगल में ले जाकर दुपट्टे से गला घोंटकर हत्या कर दी। इसके बाद शव को उसी जंगल में छिपा दिया ताकि किसी को पता नहीं चल चले। प्रेमी ने शादी के दुल्हन को ब्यूटी पार्लर कराने के बहाने से घर से बुलाया था। शादी के दिन जब शाम तक दुल्हन लौट कर नहीं आयी तो घर वालों ने खोजना शुरू किया। जब कहीं पता नहीं चला तो महानगर थाने में गुमशुदगी दर्ज करायी। इसके बाद पुलिस ने दुल्हन की तलाश शुरू की तो उसका प्रेमी पकड़ा गया और कड़ी से पूछताछ की तो उसने सारा राज खोल दिया। बताया कि उसके घर वाले शादी करने के लिए राजी नहीं थे, लड़की जिद कर रही थी। इसीलिए रास्ते से हटाने के लिए उसकी हत्या कर दी। पुराना महानगर में रहने वाले मजदूर संजय कुमार कश्यप की बेटी कोमल कश्यप जो घरो में बर्तन,चौका का कार्य करती थी उसका प्रेम प्रसंग पिछले कई वर्षों से सेमरौता तिलोई रायबरेली में रहने वाले राहुल मौर्या के साथ चल रहा था। संजय कुमार ने राहुल से बात करके विवाह करने की मंजूरी दे दी। बीते चार मई को कोमल और राहुल का विवाह अलीगंज डंडइया बाजार में स्थित बाल गोविन्द जी मैरिज हॉल से सुनिश्चित किया गया और संजय कुमार ने शादी की पूरी तैयारी कर ली थी। शादी के दिन जब विवाह होना था तो राहुल चुनाव के कार्य में व्यस्त हो गया और बारात ले जाने की तैयारी राहुल ने नहीं की थी। फिर राहुल शादी वाले दिन सुबह करीब साढ़े आठ बजे कोमल को फोन करके मैरिज हॉल के बाहर बुलाया और कोमल को मोटरसाइकिल से भगा कर अपने साथ ले गया। यह सुनते ही संजय कुमार के होश उड़ गए और महानगर पुलिस को सूचित करते हुए राहुल द्वारा कोमल को ले जाने की बात कही फिर महानगर पुलिस द्वारा पीड़ित संजय कुमार की तहरीर पर गुमशुदगी दर्ज कर जांच शुरू कर दी। इसी बीच पुलिस ने प्रेमी राहुल का नंबर हाथ लग गया और उसकी तलाश शुरू की। मंगलवार को उसे गिरफ्तार कर लिया और कड़ाई से पूछताछ की तो वह अपना जुर्म कबूल कर लिया। प्रेमी युवक के बताये गए स्थान से शव को बरामद कर लिया गया।

रेजगारी व्यापारी के कई ठिकानों पर आयकर विभाग का छापा,करोड़ों की नगदी व सोना बरामद

कटे–फटे नोट का व्यापार करने वालों के पास इतना कैश मिलने पर अधिकारी भी हैरान

प्रयाग दर्पण संवाददाता

कानपुर। शहर में कटे–फटे नोट का कारोबार करने वाले दो कारोबारियों के यहां आयकर विभाग की छापेमारी से हड़कंप मच गया। आयकर की अलग–अलग टीमों ने बुधवार को नवाबगंज और नयागंज स्थित हालसी रोड पर कटे–फटे नोट का व्यापार करने वाले संजय गुप्ता और संजय जैन के प्रतिष्ठानों पर एक साथ कार्रवाई की है। टीम को यहां पर बड़े पैमाने पर कैश भी मिला है। करीब एक करोड़ का कैश सीज किया गया है, जिसे बैंक में जमा किया जा रहा है। इसमें 10,20,50,100 और 500 के नोट हैं। शहर में मतदान से एक दिन पहले इतने बड़े पैमाने पर सीज को लेकर तमाम चर्चाएं चल रही हैं। इस कार्रवाई में लगभग 30 से ज्यादा अधिकारी शामिल हैं। कटे–फटे नोट का व्यापार करने वालों के पास इतना कैश मिलने

पर अधिकारी भी हैरान हैं। नोट गिनने के लिए आयकर विभाग चार मशीनें भी मंगाई गई है। व्यापारियों से भी पूछताछ की जा रही है। वहीं आयकर सूत्रों का कहना है कि संजय गुप्ता के द्वारा टैक्स चोरी कर करोड़ों रुपये जमा किये गए है। उनके ठिकानों पर दीवारों में छिपाया गया सोना–चांदी बरामद किया गया है। कार्रवाई जारी है। छापे में बड़ी मात्रा में नए नोट की गड्डियां बरामद व्यापारियों के मुताबिक नयागंज, कलक्टरगंज,शक्करपट्टी बाजार करेंसी बदलने के मामले में यूपी का बड़ा गढ़ माना जाता है। क्योंकि यहां मेवा और मसालों का बड़ा कारोबार है,यहां पूरे प्रदेश से व्यापारी आते हैं। ऐसे में व्यापारी भी बड़ी मात्रा में यहां सड़े–गले, कटे–फटे नोट बदल कर ले जाते हैं। नई करेंसी देने के नाम पर मोटा कमीशन यहां वसूला जाता है। 10 हजार रुपए के नए नोट के बदले 300 से 500 रुपए तक कमीशन लिया जाता है।

रामगंगा नदी में नहाते समय दो बच्चे डूबे,शव बरामद

हरपालपुर,हरदोई। अरवल थाना क्षेत्र के बेहटा मुड़िया गांव निवासी दो बच्चे बुधवार की सुबह रामगंगा नदी में नहाते समय अचानक डूब गए। साथ मे नहा रहे साथी बच्चों ने घटना की जानकारी परिजनों को दी तो कोहराम मच गया। पुलिस ने ग्रामीण गोताखोरों की मदद से दोनो बच्चो के शवों को नदी से बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए हैं। अरवल थाना क्षेत्र के बेहटा मुड़िया गांव निवासी रामप्रताप का 12 वर्षीय पुत्र शिवांशु एवं जयपाल का 11 वर्षीय पुत्र केतन अपने साथियों के साथ बुधवार की सुबह घर से 500 मीटर की दूरी पर बह रही रामगंगा नदी में नहाने के लिए गए थे। नहाते समय दोनों नदी में डूब गए। साथ में नहा रहे अन्य बच्चों ने घटना की जानकारी परिजनों को दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद ग्रामीण गोताखोरों की मदद से पुलिस ने दोनों बच्चों की तलाश शुरू कर दी। जिसमें शिवांशु को एक घंटे बाद नदी से बाहर निकाल लिया गया। आनन–फानन में परिजन उसे सीएचसी ले गये। जहां पर डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया है। मृतक के परिवार में दो भाई व दो बहनों में छोटा था। वही उसकी मां अनीता का रो रो कर बुरा हाल है। वह पड़ोस के ही गांव बेहथर के एक प्राइवेट स्कूल में कक्षा 7 का छात्र था। उधर दूसरे डूबे बालक केतन 12 पुत्र जयपाल निवासी बेहटा मुड़िया को छः घंटे बाद गोताखोरों की मदद से बरामद कर सीएचसी ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। मृतक गावँ के ही एक विद्यालय में कक्षा 7 का छात्र था। वह 2 बहन 4 भाइयों में तीसरे नंबर का था। घटनास्थल पर पहुंचे एसडीएम सवायजपुर अभिषेक सिंह ने परिवार से मिलकर आर्थिक मदद दिलाने का भरोसा दिलाया है। वही दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। अरवल थाना अध्यक्ष श्यामू कनौजिया ने नदी में डूबे बच्चों के शव निकालने वाले गोताखोरों को 1 हजार रुपये देकर पुरस्कृत किया है। अरवल थाना क्षेत्र के बेहटा मुड़िया गांव निवासी रामप्रकाश पुत्र प्यारेलाल की नदी के किनारे करीब डेढ़ बीघा मूंगफली की फसल मौके पर जुटी भारी भीड़ की चहलकदमी से पूरी तरीके से नष्ट हो गई है।

सन् 1857 क्रांति दिवस पर आयोजित गोष्ठी में विचार व्यक्त करते अशोक श्रीवास्तव

आर्थिक गुलामी से देश को बचाने के लिए होना पड़ेगा एकजुट : अशोक श्रीवास्तव

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। 1857 की क्रांति से प्रेरणा लेकर हमें वर्तमान चुनौतियों पूंजीवाद सांप्रदायिकता तानाशाही तथा आर्थिक गुलामी से देश को बचाने के लिए एकजुट होना पड़ेगा सभी क्रांतिकारियों शहीदों और राष्ट्र नायक हो के सपने को साकार किया जा सकता है उक्त विचार समाजवादी जनता पार्टी चंद्रशेखर के प्रदेश अध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव ने क्रांति दिवस के अवसर पर कैंप कार्यालय बल्ला हाता में आयोजित संगोष्ठी मैं व्यक्त करते हुए कहा कि यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक दिवस है की आज ही के दिन 1857 में क्रांति (देश के स्वतंत्रता आंदोलन)का आरंभ हुआ जोकि निरंतर 90 वर्षों तक चलता रहा और 1947 में हमें आजादी हासिल हुई यदि हमारे बीच के ही कुछ गद्दारों ने इनाम तथा जागीरो

के लालच में अंग्रेजों की मदद ना की होती तो आज से 166 वर्ष पूर्व देश आजाद हो गया होता उन्होंने कहा कि 1857 की क्रांति हिंदू मुस्लिम एकता भाईचारे और एकजुटता की भी मिसाल है जिसमें क्रांतिकारियों शहीद मौलवी अहमदुल्लाह साह मंगल पांडे बहादुर शाह जफर वीर कुंवरसिंह राजा बेनी माधव राजा जलाल बेगम हजरत महल झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तात्या टोपे नाना जी जैसे अनगिनत शहीदों राष्ट्र नायकों तथा क्रांतिकारियों ने अपना सर्वस्व बलिदान करके देश की आजादी के संघर्ष को वीरता के साथ चलाया वह अद्वितीय एवं हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है उन्हें से प्रेरणा लेकर हमें वर्तमान चुनौतियां तथा देश के गद्दारों से मुकाबला करने के लिए एकजुट होकर देश की एकता अखंडता आपसी सद्भाव भाईचारे लोकतंत्र और आर्थिक समानता तथा बुनियादी अधिकारों की रक्षा करने के लिए लामबंद होना पड़ेगा तभी शहीदों के सपनों को साकार किया जा सकेगा और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी उन्होंने यह भी कहा कि देश में चल रही नफरत एवं विभाजन की संकीर्ण राजनीत के कारण वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था का विकृत स्वरूप सामने आया है वह अत्यंत अमानवीय और पीड़ादायक है मजदूरों किसानों गरीबों वृद्धों तथा बेरोजगार लोगों के साथ सरकार द्वारा अमानवीय व्यवहार ही नहीं किया जा रहा है बल्कि लगातार बढ़ती हुई महंगाई में उन्हें भूखे प्यासे घुट घुट कर आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया जा रहा है।

व्यापार मंडल ने किया स्कूलों में समर वेकेशन करने की मांग

जीरो रोड बस अड्डे को पार्किंग स्थल बनाए जाने का किया स्वागत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। प्रयाग व्यापार मंडल ने प्रशासन से अपील की है कि निरंजन का पुल बंद होने के कारण अति ग्रीष्म तापमान होने के कारण हो रही। असुविधा को देखते हुए प्रयाग व्यापार मंडल के महामंत्री सोहेल अहमद खान ने प्रशासन से आग्रह किया कि वे कृपया करके 12वीं तक के सारे स्कूल्स ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए पूर्णता बंद करवा दें। आने जाने की असुविधा को देखते हुए बच्चों एवं टीचर्स के लिए यह अहम कदम उठाने की ठोस आवश्यकता है।

गत कई वर्षों से प्रयाग व्यापार मंडल के अध्यक्ष विजय अरोड़ा, महामंत्री सोहेल अहमद खान ने बार–बार प्रशासन के सामने जीरो रोड बस अड्डे को पार्किंग में परिवर्तित करने हेतु आग्रह किया था। उनकी मेहनत रंग लाई और प्रयाग व्यापार मंडल , अथक प्रयासों से प्रशासन ने भी गौर फरमाया और जल्दी ही कार्य प्रारंभ होने की आशा है। व्यापारियों ने इस निर्णय का हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया है।व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने कहा है कि घनी आबादी और पार्किंग की कमी होने के कारण, व्यवसाइयो और ग्राहकों को बेहद कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक सुनियोजित पार्किंग बन जाने से चौक के व्यापार में भी बढ़ोतरी होगी और बाहर से जनपदों से आने वाले ग्राहकों को भी बेहतरीन सुविधा का अनुभव होगा।व्यापारियों के इस पीड़ा को प्रशासन ने समझा और उस पर ठोस कदम उठाने की और अग्रसर हुआ इसके लिए प्रयाग व्यापार मंडल और उसकी सभी इकाईयों ने हृदय से धन्यवाद किया और उम्मीद की कि जल्द ही यह सपना पूरा होगा। राणा चावला, अरूण केसरवानी, सुशील खरबंदा, श्रीमती अनिता जयसवाल, गुरु चरण अरोड़ा, अकरम शगुन, उमेश केसरवानी, गिरधारी अग्रवाल, श्रीमती अवंतिका टंडन, श्रीमती पल्लवी अरोरा, सरदार जितेंद्र सिंह, राजीव नय्यर, राणा नय्यर, इंदर मध्यान्ह, हरजिंदर सिंह, इंदरप्रीत सिंह, महमूद खान, मो आमिर, सरदार प्रीतम सिंह, गुफरान अहमद, दलजीत सिंह बंटी, शाहिद कमाल बबलू, अनिमेष अग्रवाल, परमजीत सिंह, शिव शंकर सिंह, अखिलेश सिंह, धनंजय सिंह और मो अकरम ने प्रशासन का धन्यवाद किया।

बढ़े फाल्ट, विद्युत कटौती से परेशान हो रहे लोग

मेरठ। अघोषित विद्युत कटौती के कारण उपभोक्ता परेशान हैं। सोमवार को शहर में फाल्ट और मरम्मत कार्य के चलते कई घंटे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रही। विकासपुरी क्षेत्र में 11 केवी की लाइन में फाल्ट के चलते सुबह 6 बजे से 9 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रही। उधर विवि रोड उपकेंद्र क्षेत्र में मरम्मत कार्य के चलते रामगढ़ी, जज कॉलोनी, डिग्गी, अजंता कॉलोनी कई क्षेत्र में सुबह 11 बजे से लेकर दोपहर 1 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रही। शास्त्रीनगर, जागृति विहार, मेडिकल, जयभीम नगर, जयदेवी नगर, कालिया गढ़ी, सराय काजी, लोहिया नगर क्षेत्र में भी विद्युत आपूर्ति सही प्रकार से नहीं हो पाई। जिला अस्पताल के पास भी कई बार लाइट बार–बार आती जाती रही। अधीक्षण अभियंता शहर राजेंद्र बहादुर ने बताया कि शहर में कई क्षेत्रों में मरम्मत कार्य के चलते विद्युत आपूर्ति बाधित रही। एक हजार से अधिक कनेक्शन काटे बकाया वसूली लक्ष्य पूरा करने के लिए विद्युत विभाग की ओर से वसूली अभियान चलाया जा रहा है। इसलिए विभाग की ओर से प्रतिदिन बकायेदारों के कनेक्शन भी काटे जा रहे हैं। सोमवार को विद्युत विभाग की ओर से शहर की पांचों डिवीजन में एक हजार से अधिक उपभोक्ताओं के कनेक्शन काटे गए।

नौ हजार पुलिसकर्मियों की निगरानी में होगा चुनाव, ड्रोन से रखी जाएगी भी नजर

प्रयाग दर्पण संवाददाता

मेरठ। निकाय चुनाव को शांतिपूर्वक सम्पन्न कराने के लिए पुलिस प्रशासन ने अपनी तैयारियां पूरी कर ली है। जो भी माहौल खराब करने की कोशिश करेगा उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। करीब नौ हजार पुलिसकर्मियों की ड्यूटी चुनाव के मद्देनजर लगाई गई है। अति संवेदनशील मतदान स्थल पर ड्रोन से निगरानी होगी। एसपी यातायात जितेंद्र श्रीवास्तव ने पुलिस लाइन में चुनाव के मद्दनेजर ब्रीफिंग कर शांतिपूर्वक चुनाव कराने के साथ–साथ आचार संहिता के नियमों का पालन कराने के दिशा–निर्देश दिए। चुनाव के नोडल अधिकारी एसपी यातायात जितेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि निकाय चुनाव के लिए दूसरे जनपदों से फोर्स पहुंच गया है। इसमें सहारनपुर और मुजफ्फरनगर के साथ ही जीआरपी आगरा और मुरादाबाद के पुलिसकर्मी है, जबकि मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, शामली और सीतापुर से होमगार्ड आए हैं। पांच ड्रोन से पूरे जनपद में नजर रखी जाएगी। मतदान केंद्र पर मोबाइल प्रतिबंधा डीएम एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक मीणा ने चुनाव प्रचार बंद होते ही मतदान को लेकर जरूरी निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि मतदान के दिन मतदाता अपने वाहनों से मतदान केंद्र तक जा सकते हैं। करीब 200 मीटर दूर अपना वाहन खड़ा करके मतदान करेंगे। मतदान स्थल पर मोबाइल पर पाबंदी रहेगी। घूंघट या बुर्का पहनने वाली महिलाओं की पहचान करने के लिए महिला कर्मी और महिला पुलिस कांस्टेबल की ड्यूटी लगाई गई है। डीएम ने बताया कि मतदान केवल एपिक कार्ड अथवा निर्वाचन आयोग द्वारा जारी 15 प्रकार के विकल्पों के माध्यम से ही करेंगे। प्रत्याशी घर–घर जाकर जनसंपर्क कर सकते हैं, प्रचार के लिए लाउडस्पीकर आदि की अनुमति नहीं होगी। प्रत्याशियों, उनके एजेंट या उनके कार्यकर्ताओं के लिए 11 मई का अलग से वाहन पास जारी किया जा रहा है। प्रत्याशी के एजेंट भी उसी वार्ड के होने चाहिए, जहां से वह प्रत्याशी है। अगर किसी अपराधी को एजेंट बनाया गया तो प्रत्याशी के खिलाफ भी कार्रवाई होगी। वैन लेकर भाग रहे चालक को पकड़ाचुनाव के लिए बड़ी संख्या में बड़े और छोटे वाहनों को अधिग्रहित किया गया है। छोटे चार पहिया वाहन पुलिस लाइन में, जबकि बसें भामाशाह पार्क में खड़ी की गई हैं। मंगलवार दोपहर पुलिस लाइन से चालक चुपचाप वैन को लेकर जाने लगा, तभी सुरक्षाकर्मी ने उसे देख लिया।

संक्षिप्त खबरे

डीएम ने मतगणना स्थल का किया निरीक्षण

प्रयागराज। जिलाधिकारीधजिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार खत्री ने बुधवार को मुण्डेरा मण्डी स्थित मतगणना स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने मतगणना स्थल पर लाइट, पीने के पानी, शौचालय, साउण्ड सिस्टम सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त–दुरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने सीसीटीवी कैमरा, वीडियोग्राफी की भी समुचित व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने साफ–सफाई एवं बैरिकेटिंग की व्यवस्था आदि को भी देखा तथा साफ–सफाई और बेहतर किये जाने के निर्देश दिये है। इस अवसर पर एडीएम प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय, एडीएम वित्त एवं राजस्व जगदम्बा सिंह, एडीएम सिटी मदन कुमार सहित पुलिस विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे। इसके उपरांत जिलाधिकारीधजिला निर्वाचन अधिकारी ने संगम सभागार में राजनैतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते हुए मतगणना के सम्बंध में विचार–विमर्श किए।

अतीक के वकील सौलत हनीफ पुनः पुलिस रिमांड पर

प्रयागराज। उमेश पाल हत्याकांड मामले के आरोपी पूर्व सांसद अतीक अहमद के अधिवक्ता खान सौलत हनीफ को आज पुनः पुलिस कस्टडी में दिए जाने का आदेश सीजीएम ने दिया है। डीजीसी गुलाब चंद्र अग्रहरी ने बताया कि उक्त मामले के आरोपी अधिवक्ता खान सौलत हनीफ से कुछ और पूछताछ करने तथा अन्य दस्तावेज बरामदगी के लिए विवेचक ने अदालत में पुनः पुलिस रिमांड पर दिए जाने का निवेदन किया था। जिस पर सीजे एम दिनेश गौतम ने सौलत हनीफ को न्यायिक हिरासत से धूमनगंज पुलिस की हिरासत में शाम 3 बजे से 7 बजे तक दिए जाने का आदेश दिया है। दूसरी तरफ अतीक की बहन आशा नूरी की सरेंडर अर्जी पर आज भी धूमनगंज थाने से रिपोर्ट न आने पर अदालत ने सुनवाई के लिए 12 मई की तारीख मुकर्रर की है।

प्रत्याशी ने की निष्पक्ष मतगणना की मांग

प्रयागराज। नगर पंचायत शंकरगढ़ से सदस्य प्रत्याशी पार्वती कोटार ने बुधवार को सिविल लाइंस के एक होटल में प्रेस कांफ्रेंस कर निष्पक्ष मतगणना कराने की मांग रखी। पूर्व अध्यक्ष अनुपमा वैश्य ने आरोप लगाया कि तीन मई की रात मतदान से ठीक पहले नगर पंचायत के एक प्रत्याशी ने वोटरों को लुभाने के लिए साड़ी और पैसा बांटा। जिसकी शिकायत जिलाधिकारी और राज्य निर्वाचन आयोग से की गई। प्रेस कांफ्रेंस में मौजूद जसरा के पूर्व ब्लॉक प्रमुख घनश्याम कुमार कोटा ने आरोप लगाया कि आयोग के साथ ही इसकी शिकायत पुलिस से भी की गई है। जिसमें सभी प्रमाण केवल इतनी मांग रखी है कि शंकरगढ़ की मतगणना पर कड़ी नजर रखी जाए, जिससे यहां मतगणना निष्पक्ष हो।

थाना खुल्दाबाद पुलिस द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना खुल्दाबाद पुलिस द्वारा थाना खुल्दाबाद में पंजीकृत मु0अ0सं0 231/22 धारा 411/414/419/420/467/468/471 भा0द0सं0 के वांछित अभियुक्त राज चौरसिया पुत्र स्व0 विनोद चौरसिया नि0 फकीराबाद थाना सराय अकील जनपद कौशाम्बी को चकिया मन्ना मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त–राज चौरसिया पुत्र स्व0 विनोद चौरसिया नि0 फकीराबाद थाना सराय अकील जनपद कौशाम्बी, उम्र करीब 21 वर्ष सम्बन्धित अभियोग–मु0अ0सं0 231/22 धारा 411/414/419/420/467/468/471 भा0दं0सं0 थाना खुल्दाबाद प्रयागराज गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम 1.उ0नि0 धीरेन्द्र नाथ यादव थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज 2.का0 रवि कुमार थाना खुल्दाबाद कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना कीडगंज पुलिस द्वारा एक नफर वारण्टी गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना कीडगंज पुलिस द्वारा माननीय न्यायालय विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट अतरसुईया कमिश्नरेट प्रयागराज द्वारा निर्गत वारण्ट वाद संख्या 06/2023 धारा 151/107/116 Cr-PC से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त विनय यादव पुत्र मिश्रीलाल यादव निवासी 250 पूरावल्दी थाना कीड़गंज प्रयागराज को गिरफ्तार किया गया। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त,वारण्टी– विनय यादव पुत्र श्री मिश्रीलाल यादव निवासी 250 पूरावल्दी थाना कीड़गंज प्रयागराज, उम्र 29 वर्ष वाद संख्याः–सम्बन्धित वाद संख्या 06/2023 धारा 151/107/116 Cr-PC थाना कीडगंज प्रयागराज मा0 न्या0 विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट अतरसुईया कमिश्नरेट प्रयागराज गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम–1. उ0नि0 बाबूराम चौकी प्रभारी नई बस्ती थाना कीडगंज कमिश्नरेट प्रयागराज 2. का0 उमेश चन्द्र व का0 कपिल लखेरे थाना कीडगंज कमिश्नरेट प्रयागराज।

थाना मेजा पुलिस द्वारा 01 अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से आलाकत्ल 01 कुल्हाड़ी बरामद

प्रयागराज। घटना का संक्षिप्त विवरण– दिनांक 08.05.2023 को आवेदक विजय शंकर मिश्र पुत्र स्व0 भूपति राम मिश्र नि0 इसौटा थाना मेजा प्रयागराज द्वारा अपनी पुत्री प्रिया मिश्रा की हत्या के सम्बन्ध में थाना मेजा में तहरीर दी गयी कि जिसके आधार पर थाना मेजा में मु0अ0सं0 177/23 धारा 302 भादंवि0 बनाम नीरज पाण्डेय पुत्र रामाज्ञा पाण्डेय नि0 इसौटा थाना मेजा प्रयागराज पंजीकृत किया गया। गिरफ्तारी विवरणः–विवेचना के दौरान यह तथ्य प्रकाश में आया कि मृतका प्रिया मिश्रा के भाई विवेक मिश्रा पुत्र विजयशंकर मिश्रा नि0 इसौटा थाना मेजा प्रयागराज द्वारा अपनी बहन का नीरज पाण्डेय के साथ अफेयर होने के कारण आवेश में आकर दिनांक 08.05.2023 को सुबह घटना कारित कर घटना के साक्ष्य को नष्ट करने का भी प्रयास किया गया। थाना मेजा पुलिस द्वारा अभियुक्त को उसके घर से गिरफ्तार कर अभियुक्त की निशांदेही पर आलाकत्ल 01 कुल्हाड़ी बरामद की गयी। नियमानुसार आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी।

गणराज्य का पर्याय है स्वराजः न्यायमूर्ति अजय भनोट

हाई कोर्ट बर एसोसिएशन के तत्वावधान में स्वामी विवेकानंद विधि व्याख्यानमाला का आयोजन

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के ऐतिहासिक लाइब्रेरी हाल में ''स्वामी विवेकानन्द विधि व्याखान माला'' के अन्तर्गत संविधान में वर्णित प्रस्तावना में उल्लिखित शब्द ''गणराज्य'' विषय पर एक कार्यक्रम हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसका संचालन संयुक्त सचिव लाइब्रेरी अजय सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति अजय भनोट उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आरम्भ में हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के महासचिव नितिन शर्मा, उपाध्यक्ष अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव प्रशासन सर्वेश कुमार दुबे एवं संयुक्त सचिव प्रेस अमरेन्दु सिंह द्वारा संयुक्त रूप से मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री अजय को पुष्प गुच्छ व चीकू का पौधा भेंटकर स्वागत व अभिनन्दन किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति अजय भनोट ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार गणराज्य का पर्याय स्वराज है। जिसके माध्यम से प्रत्येक हिन्दुस्तानी को शक्ति प्रदान की गयी है और इसी के माध्यम से हम अपने उत्तरदायित्वों का बखूबी निवर्हन करते हैं। इसके साथ ही साथ इसी के माध्यम से हमारी आधारभूत सुविधाओं का क्रियान्वयन सहित हमारी संस्कृति में विचारों का आदान–प्रदान होता है। स्वामी विवेकानन्द जी स्वराज के माध्यम से ही एक तरह से नये युग की शुरूआत की है जो ऐसे महापुरूषों के नाम से अविरल चलती रहेगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम लोग उनके द्वारा बताये गये मूल्यों का क्रियान्वयन किस तरह से करें।

इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार से हमारे जीवन में एक पिता की भूमिका है, ठीक उसी प्रकार से प्रोफेशन के क्षेत्र में हमारे सीनियर की होती है। हमें अपने सीनियर का सम्मान करना चाहिए। गुरू–शिष्य एवं चौम्बर की परम्परा बनाये रखना हम सभी का कर्तव्य है। केवल अध्ययन के माध्यम से हम आगे बढ़ सकते हैं। इसके अलावा कोई अन्य रास्ता नही है। किसी भाषा को कम नही मानना चाहिए। मेरा मानना है कि हम हिन्दी बोलें तो पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई तरह और अंग्रेजी बोलें तो डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तरह। अधिवक्ता पूरी सेवा भाव से कार्य करते हैं। मैं हाईकोर्ट बार एसोसिएशन का आभारी हूँ। कार्यकारिणी सदस्य विनोद राय ने कहा कि यह विधि व्याख्यान माला ज्ञान के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन के अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित के0 श्रीवास्तव ने कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि सहित सभी अधिवक्ताओं का आभार व धन्यवाद प्रकट करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की। उक्त अवसर पर आशुतोष पाण्डेय, अशोक कुमार त्रिपाठी, अजय कुमार मिश्र (अजय जय हिन्द), अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, स्वर्ण लता सुमन (उपाध्यक्षगण), सर्वेश कुमार दुबे (संयुक्त सचिव, प्रशासन), अजय सिंह (संयुक्त सचिव लाइब्रेरी), अमरेन्दु सिंह, (संयुक्त सचिव प्रेस), अंजना चतुर्वेदी (संयुक्त सचिव, महिला), आशीष कुमार मिश्र (कोषाध्यक्ष), प्रीति द्विवेदी, श्रीमती सरिता सिंह, अभ्युदय त्रिपाठी, विनोद राय, अमित कुमार पाण्डेय, ओम प्रकाश विश्वकर्मा, अरविन्दे कुमार सिंह, अरूण कुमार त्रिपाठी, आशुतोष मिश्र (नगरहा), सुधीर कुमार केसरवानी, साइमा सहेर, अनिरूद्ध ओझा, अनिल कुमार मिश्र, गुलाब सिंह यादव एवं अनिल प्रताप सिंह (कार्यकारिणी सदस्यगण) सहित बड़ी संख्या में अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

लड़की बनकर फेसबुक पर करते थे दोस्ती फिर ब्लैकमेल

प्रयागराज। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर लड़की बनकर दोस्ती करने और न्यूड वीडियो कॉल कर अश्लील वीडियो बनाने वालों का खुलासा हुआ है। पकड़े गए युवक ने चौक के एक व्यापारी को कॉल कर आपत्तिजनक वीडियो बना लिया था और ब्लैकमेल कर उससे दस लाख रुपये वसूले थे। साइबर थाने की पुलिस ने जांच के बाद आरोपी को जेल भेज दिया। गैंग में शामिल दूसरा युवक फरार है। साइबर थाने की पुलिस ने बताया कि राजस्थान के अलवर निवासी सूबेदार खान उर्फ सुब्बू को गिरफ्तार किया गया है। इसका साथी राहुल खान फरार है। ये दोनों मिलकर सोशल मीडिया पर लोगों को शिकार बनाते थे। सूबेदार ने लड़की बनकर फेसबुक पर कई नामों से प्रोफाइल बनाई। उसमें हॉट पिक्चर अपलोड करता था।

2021 में उसने चौक के रहने वाले एक व्यापारी से दोस्ती की। मैसेंजर पर चौटिंग शुरू हुई। इस बाद उसने व्हाट्स एप नंबर लिया। सेक्स चौटिंग के लिए शातिर ने व्यापारी को रात में वीडियो कॉल की। व्यापारी ने कपड़े उतार दिए तो शातिर ने उसका वीडियो बना लिया। फिर न्यूड वीडियो दिखाकर व्यापारी को ब्लैकमेल करने लगा। धमकी दी कि अगर उसे रुपये नहीं मिले तो वह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर देगा। उसके फेसबुक दोस्तों को शेयर कर देगा। डर से व्यापारी ने उसके दो बैंक खातों में कुल 10 लाख रुपये जमा कर दिए। इसके बाद भी शातिर रुपये मांग रहा ऐप पर पढ़ें आखिर में व्यापारी ने साइबर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी को पकड़ लिया, लेकिन रुपयों की बरामदगी नहीं कर सकी है। पुलिस ने बताया कि ठगी के रुपयों से उसने लोन की रकम जमा की थी।

दूसरे संप्रदाय के युवक से जबरन शादी कराने का आरोप

मेरठ। खरखौदा क्षेत्र के एक गांव की निवासी युवती ने प्रेमी संग थाने पहुंचकर अपने परिजनों पर दूसरे संप्रदाय के युवक से बिना उसकी मर्जी के जबरन शादी करने का आरोप लगाया है। युवती ने अपने ससुरालियों पर बरन धर्म परिवर्तन करने व एक माह तक उसे बंधक बनाने का आरोप भी लगाया है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। युवती ने पुलिस को बताया कि परिजनों ने उसकी मर्जी के खिलाफ 20 मार्च को मेरठ निवासी दूसरे समुदाय के युवक से जबरन शादी कर दी थी। युवती का कहना है कि वह अपने प्रेमी संग विवाह करना चाहती थी, लेकिन परिजनों ने दूसरे समुदाय के युवक से जबरन विवाह कराया। उसका नाम भी बदल दिया गया। सोमवार को उसे मौका मिला तो वह ससुराल से भाग निकली। युवती की शादी अपने ही संप्रदाय के युवक से हुई है, युवती खुद अलग धर्म के युवक से शादी करना चाहती है। युवती की तहरीर पर जांच की जा रही है।

मेधावी छात्रों का अभिनंदन एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह आयोजित

प्रयागराज। के पी इन्टर कालेज प्रयागराज में मेधावी छात्र अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 5 – 5 छात्रों को स्मृति चिन्ह, माल्यार्पण एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुंशी काली प्रसाद की वंदना श्जय–जय कालीप्रसाद तेरी बलिहारीश से हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष एवं पूर्व महापौर चौ.जितेन्द्र नाथ सिंह ने छात्रो को संबोधित करते हुए कहा कि छात्रों ने बेहतरीन प्रदर्शन कर कालेज को गौरवान्वित किया है। छात्रो के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए आगे कहा कि श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण श्रेष्ठ नागरिकों से होता है और श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण विद्यालयों का दायित्व है। उन्होंने अध्यापकों का प्रेरणास्पद मार्गदर्शन करते हुए आगामी बोर्ड परीक्षाओं में विशेष रूप से स्थान बनाने का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्य डॉ योगेन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए गत माह अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कायस्थ पाठशाला अध्यक्ष एवं पूर्व महापौर चौ.जितेन्द्र नाथ सिंह को महासभा का पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने के लिए कालेज परिवार की ओर से अभिनन्दन करते हुए अभिनन्दन पत्र एवं उत्तरीय भेंट कर सम्मानित किया। कालेज की उपाध्यक्ष प्रशासन डॉ सुधा प्रकाश ने समारोह की अध्यक्षता की और उपाध्यक्ष वित्त अरुण कुमार वित्त विशिष्ट अतिथि रहे। संचालन खेल प्रवक्ता उमेश खरे और आभार ज्ञापन सुदीप कुमार ने किया।

प्रयागराज के विस्तारित क्षेत्रो के विकास हेतु विकास का रोड मैप किया तैयार

- योगी सरकार 200 करोड़ की लागत से बिछायेगी सड़कों का जाल
- 20 हजार स्मार्ट स्ट्रीट लाइट्स से जगमग होंगे नए वार्ड

प्रयागराज। प्रयागराज शहर का भौगोलिक विस्तार होने के बाद यहां सड़क, बिजली, पानी और साफ सफाई जैसी बुनियादी सेवाओं का विस्तार एक मूलभूत आवश्यकता है। योगी सरकार ने नगर निगम में शामिल किये गए इन विस्तारित क्षेत्रो के विकास का रोड मैप तैयार कर लिया है। चुनावी आचार संहिता हटते ही इसकी शुरुआत हो जायेगी।

प्रयागराज में नगर सीमा विस्तार के बाद शहर में वार्डों की संख्या 80 से बढ़कर 100 हो गई है। नगर क्षेत्र में शामिल हुई 207 गाँव 4 लाख से अधिक आबादी के इलाके के मार्गों में अब सड़कों का निर्माण पहली आवश्यकता होगी। नगर निगम की सीमा में शामिल हुए नए विस्तारित क्षेत्रो का विकास शहर की नयी सरकार के शपथ ग्रहण के बाद शुरू जाएगा। नगर निगम के चीफ इंजीनियर सतीश कुमार के मुताबिक नगर निगम विस्तारित क्षेत्रों में सड़क और नाली 200 करोड़ रुपये से बनवाएगा। 300 किलोमीटर में सड़क बनेंगी। सीवर लाइन और सफाई के लिए अतिरिक्त बजट होगा।

प्रयागराज शहर का भौगोलिक विस्तार होने के बाद यहां बिजली पानी जैसी बुनियादी सेवाओं का विस्तार एक मूलभूत आवश्यकता थी । शहरी सीमा का हिस्सा बने जिले के 207 गांव में विकास की रोशनी का तेजी से विस्तार होगा। नगर आयुक्त चन्द्र मोहन गर्ग बताते हैं कि नगर क्षेत्र में शामिल हुई इन ग्राम सभाओं की 4,28,206 की आबादी अब नगर निगम का हिस्सा बन चुकी है। नगर निगम विस्तारित क्षेत्रों की सडको और गलियों में जगमग करने के लिए 20 हजार से अधिक एलईडी लाइट्स लगाई जायेंगी। निगम ने इसके लिए पहले फेज में 15 करोड़ रुपये खर्च करेगा।

24 घंटे विद्युत आपूर्ति के लिए बिजली विभाग से मिला 81 करोड़ का बजट

प्रयागराज। शहरी सीमा में शामिल हुई इस आबादी में बिजली विभाग की तरफ से 24 घंटे विद्युत आपूर्ति जारी रखने के लिए 81 करोड़ का बजट माँगा गया है। बिजली विभाग के मुख्य अभियंता विनोद कुमार गंगवार के मुताबिक विभाग ने सीमा विस्तार वाले क्षेत्रों में कुल 81 करोड़ रूपए से विद्युत आपूर्ति व्यवस्था सुधारने का प्रस्ताव ऊर्जा निगम को भेजा गया था। इसके पहले चरण में 50 फीसदी बजट का आबंटन हो जाने से इसका कार्य शुरू हो चुका है।

फर्जी मतदान हुआ तो होगी कड़ी कार्रवाई– सीओ

प्रयाग दर्पण संवाददाता

मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ। आज होने वाले नगर निकाय चुनाव को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से कटिबद्ध है। चुनाव सकुशल संपन्न कराने के लिए रात दिन कड़ी मेहनत की जा रही है। पुलिस हर पहलू पर नजर बनाए हुए हैं। चुनाव में किसी तरह की कोई गड़बड़ी ना हो इसके लिए हर हथकंडे अपना रही है। फर्जी वोटिंग के लिए पुलिस प्रशासन ने पूरी तरह से कमर कस ली है। किसी भी कीमत पर फर्जी मतदान न होने का सपथ लिया है। मतदान से पूर्व पुलिस क्षेत्राधिकारी डॉक्टर अजय विक्रम सिंह एवं कोतवाली प्रभारी निरीक्षक संजय त्रिपाठी ने मोहम्मदाबाद गोहन एवं वलीदपुर नगर पंचायत के सभासद एवं चेयरमैन पद के प्रत्याशियों की कोतवाली परिसर में अचानक बैठक बुलाई। जिसमें पुलिस ने प्रत्याशियों को सौहार्दपूर्ण ढंग से मतदान कराने का पाठ पढ़ाया। पुलिस उपाधीक्षक ने प्रत्याशियों को जानकारी देते हुए बताया कि मतदान करने से पूर्व सभी लोगों की आईडी चेक की जाएगी जिनकी आईडी सही होगी उन्हें को मतदान करने दिया जाएगा। गलत आईडी मिलने पर उन्हें मतदान केंद्र से बाहर कर दिया जाएगा। कहा कि कोई भी प्रत्याशी चुनाव सामग्री लेकर मतदान केंद्र के आसपास नहीं दिखाई देना चाहिए यदि ऐसा करते पाया जाता है तो उसके खिलाफ तत्काल विधिक कार्रवाई की जाएगी। उन्हें किसी भी हाल में छोड़ा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी प्रत्याशियों को आदर्श आचार संहिता का अनुपालन भी हर हाल में करना होगा जो भी प्रत्याशी आचार संहिता का उल्लंघन करते पाया जाता है तो सीधे संबंधित धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर दिया जाएगा। कोतवाली प्रभारी ने कहा कि चुनाव में किसी भी तरह की कोई भी गड़बड़ी करते पकड़ा गया तो उसे सीधे जेल की सलाखों में भेज दिया जाएगा। मतदान के पूर्व किसी भी प्रत्याशी या उसके समर्थकों द्वारा कोई अफवाह उड़ाया गया तो उसकी खैर नहीं होगी। सोशल मीडिया पर किसी तरह की आपत्तिजनक पोस्ट शेयर ना करें जिससे कि अशांति फैलने की शंका हो यदि कोई भी असामाजिक तत्व इस तरह का कार्य करता है तो उस की सूचना तत्काल पुलिस प्रशासन को दें जिससे कि समय रहते उसके खिलाफ कार्रवाई किया जा सके।

घर मे लगी आग चार से मासूम सहित सात की मौत, तीन झुलसे, एक की हालत गंभीर

कुशीनगर। जनपद के रामकोला थाना क्षेत्र के माघी मठिया गांव में बुधवार को दोपहर अचानक एक झोपड़ी मे आग लग गयी। देखते ही देखते झोपड़ी मे लगी आग पक्के मकान को अपने चपेट मे ले लिया। जिसमे एक ही परिवार के चार मासूम बच्चे सहित सात लोगों की जलकर मौत हो गई है। वहीं एक अन्य की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना के बाद गांव में अफरा–तफरी मच गयी, जब आग लगी उस समय सभी लोग घर मे सो रहे थे। अग्निशमन विभाग का दस्ता सूचना देने के दो घंटे विलंब से पहुंचा। इसको लेकर ग्रामीणों में नाराजगी रही। डीएम,एसपी ने मौके पर पहुचकर स्थित का जायजा लिया।

जानकारी के अनुसार रामकोला थाना क्षेत्र के माघी मठिया निवासी शेर मोहम्मद पैर से दिव्यांग है। वह ऑटो चलाकर परिवार का भरण पोषण करता है। रोज की तरह बुधवार को भी शेर मोहम्मद ऑटो लेकर निकल गया। घर में उसकी 30 वर्षीय पत्नी फातिमा, 13 वर्षीय बेटियां कुलसुम , 6 वर्षीय रोकई, 4 वर्षीय आयशा , दो वर्षीय अमीना व दो माह की खतीजा घर मे मौजूद थीं। दोपहर में तेज , हवा चलने के दौरान सभी घर के अंदर सो रहे थे। घर के बाहर झोपड़ी डाल रखी थी। दोपहर बाद करीब तीन बजे इसी झोपड़ी में अज्ञात कारणों से आग लगी। आग की लपटें झोपड़ी को निगलने के बाद पक्के मकान में वहां तक पहुंच गयीं, जहां सभी सो रहे थे। जब तक उनकी नींद खुलती तब तक सभी आग में बुरी तरह से घिर चुके थे। चीख–चित्कार सुनकर आस पास के लोग जुटे। पंपिंग सेट चलाकर आग पर पानी फेकने का क्रम शुरू हुआ। जब तक आग पर काबू पाया जाता, तब तक फातिमा व उसकी बेटियां रोकई, आयशा, अमीना व खतीजा की जलकर मौत हो चुकी थी जबकि दादा–दादी की मौत जिला अस्पताल में हुई है। गंभीर रूप से झुलसे शफीक, मोतीरानी व बच्ची कुलसुम का इलाज जिला अस्पताल मे चल रहा है। दिल दहला देने वाली घटना की सूचना पाकर जिलाधिकारी रमेश रंजन, पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल घटना स्थल पर पहुचकर स्थित का जायजा लिया। डीएम ने सभी मृतकों पर चार चार लाख मुआवजा देने की घोषणा की है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–ः संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)

मोबाइल नंबर 9450475366

Email

prayagdarpan@gmail.com

R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।